PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 109
दि. 18.08.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

भाजपा की नई राष्ट्रीय टीम में बड़ा बदलाव, स्मृति ईरानी की वापसी से अमित मालवीय की विदाई तक बदली संगठन की तस्वीर

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने संगठन के स्तर पर बड़ा फेरबदल करते हुए अपनी 65 सदस्यीय नई राष्ट्रीय टीम का ऐलान कर दिया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के नेतृत्व में गठित इस नई टीम में जहां अनुभवी और पुराने नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां बरकरार रखी गई हैं, वहीं कई नए चेहरों को संगठन में जगह देकर पार्टी ने अपनी कार्यशैली में बदलाव के संकेत भी दिए हैं। नई टीम में पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की संगठन में वापसी, राम माधव को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी, विनोद तावड़े और सुनील बंसल को महासचिव पद पर बरकरार रखना तथा सातों मोर्चों के लिए नए अध्यक्षों की नियुक्ति प्रमुख बदलावों में शामिल हैं। दूसरी ओर लंबे समय से भाजपा के आईटी सेल की कमान संभाल रहे अमित मालवीय को हटाकर डिजिटल और सोशल मीडिया व्यवस्था में भी बड़ा बदलाव किया गया है। भाजपा की नई राष्ट्रीय टीम में संगठन के विभिन्न स्तरों को मिलाकर कुल 65 पदाधिकारी शामिल किए गए हैं। इनमें 13 राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, आठ महासचिव, 16 राष्ट्रीय सचिव, दो संयुक्त महामंत्री संगठन, एक कोषाध्यक्ष, एक सह-कोषाध्यक्ष, सात मोर्चों के अध्यक्ष तथा मीडिया, सोशल मीडिया और विभिन्न प्रकोष्ठों से जुड़े पदाधिकारी शामिल हैं। नई टीम में देश के 23 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को प्रतिनिधित्व दिया गया है। उत्तर प्रदेश से आठ नेताओं को राष्ट्रीय संगठन में जगह मिली है। इससे संकेत मिलता है कि पार्टी ने राष्ट्रीय टीम तैयार करते समय क्षेत्रीय संतुलन और संगठनात्मक अनुभव दोनों को ध्यान में रखा है। नई टीम में कुछ ऐसे नेताओं की वापसी हुई है, जिनका संगठन में लंबा अनुभव रहा है। राम माधव को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है, जबकि पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को राष्ट्रीय महासचिव की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। स्मृति ईरानी की वापसी को भाजपा के संगठनात्मक ढांचे में महत्वपूर्ण घटनाक्रम माना जा रहा है। केंद्रीय मंत्री के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाने के बाद अब उन्हें पार्टी संगठन में अहम भूमिका दी गई है। इससे आने वाले समय में संगठन और राजनीतिक गतिविधियों में उनकी सक्रियता बढ़ने की संभावना है।

सौदान सिंह को भी संगठन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी से दोबारा जोड़ा गया है। भाजपा में संगठन को मजबूत करने और राज्यों में पार्टी के विस्तार के लिहाज से उनकी भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती रही है। वहीं बीएल संतोष को संगठन महामंत्री और शिवप्रकाश को संयुक्त महामंत्री संगठन के पद पर बरकरार रखा गया है। इससे स्पष्ट है कि पार्टी ने संगठन की केंद्रीय संरचना में निरंतरता बनाए रखने का भी फैसला किया है। राष्ट्रीय महासचिवों की सूची में विनोद तावड़े और सुनील बंसल को उनकी जिम्मेदारी पर बनाए रखा गया है। इनके साथ बिप्लब कुमार देब, स्मृति ईरानी, सतीश पूनिया, गजेंद्र पटेल, हरीश द्विवेदी और संजय भाटिया को भी राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया है। महासचिव का पद भाजपा के संगठन में बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इन नेताओं को राज्यों में संगठनात्मक काम, चुनावी रणनीति और पार्टी के विस्तार जैसे कई महत्वपूर्ण दायित्व संभालने पड़ते हैं। नई टीम में अनुभवी नेताओं और अपेक्षाकृत नए चेहरों का यह मिश्रण पार्टी की रणनीति को दर्शाता है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्षों की सूची में भी कई बड़े नाम शामिल हैं। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत, राम माधव, बैजयंत जय पांडा, डी. पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, वर्षाबेन नरेंद्रभाई दोशी, डॉ. भारती प्रवीण पवार, सरदार मनप्रीत सिंह बादल, लाल सिंह आर्य, प्रो. एम. नागराज, प्रो. तारीक मंसूर और डॉ. मधुचंद्र कर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। इस सूची में कई राज्यों और सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है।

वसुंधरा राजे को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद पर बरकरार रखा गया है। राजस्थान की राजनीति में लंबे समय तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वसुंधरा राजे का राष्ट्रीय संगठन में बने रहना पार्टी के लिए राजनीतिक और संगठनात्मक दोनों दृष्टि से अहम माना जा रहा है। इसी तरह रेखा वर्मा को भी उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी पर बरकरार रखा गया है। आंध्र प्रदेश की वरिष्ठ नेता डी. पुरंदेश्वरी और पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीण पवार को भी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाकर पार्टी ने क्षेत्रीय और महिला प्रतिनिधित्व को महत्व दिया है। नई टीम में महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय है। अलग-अलग पदों पर कई महिला नेताओं को जिम्मेदारी दी गई है। वसुंधरा राजे, डी. पुरंदेश्वरी, रेखा वर्मा, वर्षाबेन नरेंद्रभाई दोशी, डॉ. भारती प्रवीण पवार और डॉ. मधुचंद्र कर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। राष्ट्रीय सचिवों की सूची में भाजपा सांसद कविता पाटीदार, फांग्नोन कोन्याक और संगीता यादव को शामिल किया गया है। महिला मोर्चा की कमान भी बदली गई है। भाजपा सांसद रूपकुमारी चौधरी को महिला मोर्चा का नया अध्यक्ष बनाया गया है। वह वनथी श्रीनिवासन की जगह यह जिम्मेदारी संभालेंगी। भाजपा ने राष्ट्रीय सचिवों की संख्या बढ़ाकर 16 कर दी है। इनमें कविता पाटीदार, के. सुरेंद्रन, भोला सिंह, डॉ. प्रदीप वर्मा, जगदीश ईश्वरभाई पटेल, डॉ. संदीप पाठक, फांग्नोन कोन्यक, अनिल एंटनी, डॉ. एम. वेंकटेशन, मनोज टिग्गा, सिद्धार्थ शंभु, डॉ. स्वदेश सिंह, मृगांका देव बर्मन, रोहन गुप्ता, जयप्रकाश और संगीता यादव को जिम्मेदारी दी गई है। राष्ट्रीय सचिवों का यह विस्तार पार्टी के संगठन को विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों तक और मजबूत तरीके से पहुंचाने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है।

पार्टी ने वित्तीय और कार्यालय संबंधी जिम्मेदारियों में भी बदलाव और निरंतरता दोनों को साथ रखा है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष बनाया गया है, जबकि राजेश मंगल को सह-कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। तरुण चुघ को राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी और महेंद्र पांडे को राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री बनाया गया है। अनिल बलूनी राष्ट्रीय मीडिया संयोजक के पद पर बने रहेंगे। इससे पार्टी की मीडिया रणनीति में अनुभव को बनाए रखने का संकेत मिलता है। भाजपा की नई टीम में सबसे अधिक चर्चा आईटी और सोशल मीडिया से जुड़े बदलाव को लेकर है। लंबे समय से भाजपा आईटी सेल का नेतृत्व कर रहे अमित मालवीय को इस जिम्मेदारी से हटा दिया गया है। उनकी जगह दीपक महस्के को सोशल मीडिया हेड की जिम्मेदारी दी गई है। इसके साथ ही पार्टी ने सोशल मीडिया के कामकाज को विभिन्न राज्यों के नेताओं के साथ जोड़ने की कोशिश की है। महाराष्ट्र की प्रीति गांधी, दिल्ली के शिवानंद द्विवेदी, उत्तराखंड के आलोक भट्ट और हरियाणा के अरुण यादव को सोशल मीडिया सह-संयोजक की जिम्मेदारी दी गई है। डिजिटल राजनीति के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए यह बदलाव खास महत्व रखता है। पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया भाजपा के राजनीतिक प्रचार और जनसंपर्क का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। पार्टी की डिजिटल टीम का काम केवल सोशल मीडिया पोस्ट तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकार की योजनाओं, राजनीतिक संदेशों, विपक्ष के आरोपों और चुनावी मुद्दों को जनता तक पहुंचाने में भी इसकी भूमिका रहती है। ऐसे में नई सोशल मीडिया टीम को पार्टी के डिजिटल अभियान को नए तरीके से आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी होगी।

पार्टी ने अपने सभी सात मोर्चों में भी नए अध्यक्ष नियुक्त किए हैं। युवा मोर्चा की जिम्मेदारी डॉ. हेमांग जोशी को दी गई है। महिला मोर्चा की कमान रूप कुमारी चौधरी को मिली है। ओबीसी मोर्चा के अध्यक्ष अमरपाल मौर्य, किसान मोर्चा के अध्यक्ष बंसीलाल गुर्जर, अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष शिवेश कुमार राम, अनुसूचित जनजाति मोर्चा के अध्यक्ष डॉ. मन्नालाल रावत और अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष कुंवर बासित अली बनाए गए हैं। इन मोर्चों के जरिए पार्टी विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक समूहों के बीच अपना संगठनात्मक आधार मजबूत करने की कोशिश करेगी।

बैंक खाता फ्रीज होने पर हाईकोर्ट पहुंचे अभिषेक बनर्जी, विदेश यात्रा से पहले मांगी तत्काल राहत

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस के सांसद और पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने अपने बैंक खाते को कथित तौर पर फ्रीज किए जाने के मामले में सोमवार को कलकत्ता हाईकोर्ट का रुख किया। डायमंड हार्बर से सांसद बनर्जी ने एक निजी बैंक की कार्रवाई को चुनौती देते हुए याचिका दाखिल की और मामले की तत्काल सुनवाई की मांग की। उनके वकील ने अदालत को बताया कि अभिषेक बनर्जी चिकित्सा कारणों से जल्द ही विदेश यात्रा पर जाने वाले हैं और इस यात्रा के लिए उन्हें सुप्रीम कोर्ट से अनुमति भी मिल चुकी है। ऐसे में बैंक खाते पर लगी रोक को लेकर जल्द सुनवाई जरूरी है।

मामले की सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति कृष्ण राव ने कहा कि याचिका पर बुधवार को सुनवाई की जाएगी। अदालत ने इस बीच अभिषेक बनर्जी की ओर से पेश वकील को मामले से जुड़े संबंधित पक्षों को नोटिस देने के लिए कहा है। अदालत के इस निर्देश के बाद अब मामले की अगली सुनवाई बुधवार को होगी, जहां याचिकाकर्ता की ओर से बैंक खाते को फ्रीज किए जाने की कार्रवाई पर विस्तार से दलीलें रखे जाने की संभावना है। अभिषेक बनर्जी की ओर से अदालत में पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अयान

भट्टाचार्य ने दावा किया कि निजी बैंक ने उनके मुवक्किल का निजी बैंक खाता फ्रीज करने से पहले उचित प्रक्रिया का पालन नहीं किया। वकील ने अदालत के समक्ष बैंक की कार्रवाई को चुनौती देते हुए कहा कि खाते को फ्रीज किए जाने के कारण अभिषेक बनर्जी को व्यक्तिगत रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसी आधार पर मामले को प्राथमिकता के साथ सुनने का अनुरोध किया गया। याचिका में बैंक की ओर से की गई कथित कार्रवाई और उसके आधार को चुनौती दी गई है। हालांकि मामले की विस्तृत सुनवाई अभी बुधवार को होनी है, इसलिए खाते को फ्रीज करने के पीछे बैंक की ओर से क्या कारण बताया गया है और किस प्रक्रिया के तहत यह कदम उठाया गया, इस पर अदालत में आगे की सुनवाई के दौरान स्थिति स्पष्ट होने की उम्मीद है। अभिषेक बनर्जी की ओर से तत्काल सुनवाई की मांग का एक प्रमुख कारण उनकी प्रस्तावित विदेश यात्रा भी है। उनके वकील ने अदालत को बताया कि टीएमसी सांसद चिकित्सा कारणों से विदेश जाने वाले हैं। इस यात्रा के लिए उन्हें सुप्रीम कोर्ट से अनुमति मिल चुकी है। ऐसे में उनका कहना है कि बैंक खाते से जुड़ी समस्या को जल्द सुलझाया जाना आवश्यक है, ताकि विदेश यात्रा से पहले उन्हें किसी तरह की वित्तीय या प्रशासनिक परेशानी का सामना न करना पड़े। अभिषेक बनर्जी पश्चिम बंगाल की राजनीति में तृणमूल कांग्रेस के प्रमुख चेहरों में शामिल हैं। वह डायमंड हार्बर लोकसभा सीट से सांसद हैं और पार्टी संगठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे पहले भी विभिन्न मामलों को लेकर उनका नाम राजनीतिक और कानूनी चर्चाओं में रहा है। ऐसे में उनके बैंक खाते से जुड़ा यह मामला सामने आने के बाद राजनीतिक हलकों में भी इस पर नजर बनी हुई है। हालांकि, फिलहाल मामला अदालत के समक्ष विचाराधीन है और बैंक खाते को फ्रीज किए जाने के कारणों तथा बैंक की ओर से अपनाई गई प्रक्रिया पर अंतिम स्थिति अदालत की सुनवाई के बाद ही स्पष्ट होगी। अभिषेक बनर्जी की ओर से यह आरोप लगाया गया है कि निजी बैंक ने उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना खाता फ्रीज किया, जबकि संबंधित पक्ष को अपना पक्ष रखने का अवसर भी आगे की सुनवाई में मिलेगा। सोमवार को अदालत में याचिका का उल्लेख किए जाने के बाद न्यायमूर्ति कृष्ण राव ने तत्काल उसी दिन सुनवाई करने के बजाय बुधवार की तारीख तय की। अदालत ने याचिकाकर्ता के वकील को संबंधित पक्षों को नोटिस देने का निर्देश भी दिया। इससे संकेत मिलता है कि अदालत मामले में बैंक और अन्य संबंधित पक्षों का पक्ष सुनने के बाद आगे की दिशा तय करना चाहती है। अभिषेक बनर्जी की विदेश यात्रा को लेकर सुप्रीम कोर्ट की अनुमति का उल्लेख भी सुनवाई के दौरान विशेष रूप से किया गया। उनके वकील ने इसी तथ्य को आधार बनाकर मामले में जल्द सुनवाई का अनुरोध किया।

स्वतंत्रता दिवस से पहले आतंकी नेटवर्क पर बड़ा प्रहार 14 राज्यों में 200 से ज्यादा गिरफ्तार: अमित शाह

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस से पहले देशभर में सुरक्षा एजेंसियों ने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से कथित तौर पर जुड़े 'शहजाद भट्टी नेटवर्क' के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को बताया कि 14 राज्यों में एक साथ चलाए गए समन्वित अभियान में 200 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया है। सुरक्षा एजेंसियों के मुताबिक, इस कार्रवाई के दौरान आतंकी हमलों की कथित साजिशों को विफल किया गया और नेटवर्क से जुड़े लोगों के ठिकानों से आईईडी, ग्रेनेड, पिस्तौल, जिंदा कारतूस और अन्य आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई।

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस से पहले सुरक्षा एजेंसियों की इस कार्रवाई का उद्देश्य देश में किसी भी संभावित आतंकी साजिश को समय रहते रोकना और ऐसे नेटवर्क को पूरी तरह निष्क्रिय करना था। उन्होंने कहा कि कई राज्यों में एक साथ की गई कार्रवाई आतंकवाद के खिलाफ सरकार की शून्य सहनशीलता की नीति को दर्शाती है। सुरक्षा एजेंसियों ने कथित नेटवर्क की गतिविधियों से जुड़े लोगों की पहचान करने के बाद अलग-अलग स्थानों पर कार्रवाई की और बड़ी संख्या में संदिग्धों को हिरासत में लिया।

अधिकारियों के मुताबिक, अभियान के दौरान बरामद सामग्री में इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस यानी आईईडी, पाकिस्तान ऑर्डनेंस फैक्ट्री के निशान वाले ग्रेनेड, पिस्तौल और जिंदा कारतूस शामिल हैं। इसके अलावा कुछ ऐसे सीसीटीवी कैमरे भी जब्त किए गए हैं, जिनका इस्तेमाल कथित तौर पर निगरानी और रेकी जैसी गतिविधियों के लिए किया जा सकता था। सुरक्षा एजेंसियां अब बरामद सामग्री और डिजिटल उपकरणों की जांच कर नेटवर्क के पूरे संचालन और इसके संपर्कों का पता लगाने में जुटी हैं।

जांच एजेंसियों के अनुसार, कथित नेटवर्क का दायरा केवल हथियारों की व्यवस्था तक सीमित नहीं था। इसमें युवाओं की भर्ती, ऑनलाइन कट्टरपंथ फैलाने, संभावित ठिकानों की रेकी करने, हथियार उपलब्ध कराने, जासूसी गतिविधियों और स्लीपर सेल तैयार करने जैसी गतिविधियों के आरोप सामने आए हैं। एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि गिरफ्तार किए गए लोगों में से किनकी भूमिका क्या थी और उन्हें कथित तौर पर किस तरह के निर्देश दिए जा रहे थे।

इस पूरे नेटवर्क की जांच में असम का मामला भी महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में सामने आया है। असम पुलिस के विशेष कार्यबल ने 24 जुलाई को धुबरी, चिरांग और बारपेटा पुलिस के साथ संयुक्त अभियान चलाकर तीन संदिग्धों को गिरफ्तार किया था। पुलिस का दावा था कि ये लोग पाकिस्तान स्थित नेटवर्क से कथित रूप से संपर्क में थे। उनके पास से पांच मोबाइल फोन, सात सिम कार्ड, आधार कार्ड, बैंक पासबुक, डेबिट कार्ड और अन्य दस्तावेज बरामद किए गए थे।

असम पुलिस के विशेष कार्यबल के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रणब कुमार पेगू के मुताबिक, शुरुआती जांच में सामने आया कि कथित नेटवर्क एन्क्रिप्टेड संचार माध्यमों के जरिए पाकिस्तान में मौजूद आईएसआई से जुड़े हैंडलरों के संपर्क में था। जांच अधिकारियों ने यह भी दावा किया कि नेटवर्क के संपर्क कई कथित अग्रिम संगठनों तक फैले हुए थे। इन संपर्कों की वास्तविक प्रकृति और आरोपों की पुष्टि के लिए जांच जारी है।

जांच एजेंसियों के मुताबिक, कथित नेटवर्क के संबंध खालिस्तान आर्म्ड फोर्स, पंजाब सॉवरेनिटी अलायंस, खालिस्तान लिबरेशन आर्मी, शेर-ए-पंजाब ब्रिगेड, यूनाइटेड सिख ब्रदरहुड, सिख टाइगर्स ऑफ खालिस्तान और तहरीक-ए-तालिबान हिंदुस्तान जैसे संगठनों से होने का संदेह सामने आया है। सुरक्षा एजेंसियां अब इन कथित संगठनों और गिरफ्तार संदिग्धों के बीच संपर्कों की जांच कर रही हैं। हालांकि, किसी भी संगठन से संबंध के आरोपों को अंतिम रूप से साबित करने के लिए जांच और कानूनी प्रक्रिया पूरी होना जरूरी होगा।

असम पुलिस के अनुसार, तहरीक-ए-तालिबान हिंदुस्तान ने 22 फरवरी और 24 मई 2026 को पंजाब पुलिस के दो कर्मचारियों की लक्षित हत्या की जिम्मेदारी लेने का दावा किया था।

बांकुड़ा में कार्यकर्ता के पिता की मौत पर सियासत गरम सीजेपी ने सरकार को दिया 10 दिन का अल्टीमेटम

बांकुड़ा। पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले के इंडास क्षेत्र में एक पार्टी स्वयंसेवक के पिता की कथित हमले के बाद हुई मौत ने राजनीतिक विवाद को तेज कर दिया है। मामले को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नेता आशुतोष रांका सोमवार को मृतक के परिवार से मिलने करिशुंडा गांव पहुंचे और राज्य सरकार को सभी आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए 10 दिन का अल्टीमेटम दिया। रांका ने इंडास थाने की पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठाते हुए मामले की अदालत की निगरानी में जांच कराने की मांग की। उन्होंने चेतावनी दी कि तय समय में आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई तो पार्टी जिला प्रशासन कार्यालय का घेराव करेगी और इसके बाद राज्यव्यापी आंदोलन शुरू किया जाएगा।

दिल्ली से अपने सहयोगियों के साथ करिशुंडा गांव पहुंचे आशुतोष रांका ने मृतक के परिजनों से मुलाकात कर घटना की जानकारी ली। उन्होंने मृतक जनाब माफिक के बेटे अब्दुल हाफिज से भी बातचीत की। हाफिज को सीजेपी का स्वयंसेवक बताया जा रहा है। आरोप है कि उनके घर पर हुए हमले में माफिक गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्हें पहले इंडास ब्लॉक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया, लेकिन हालत गंभीर होने के बाद 15 अगस्त को बर्दवान मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल भेजा गया। उपचार के दौरान शनिवार रात उनकी मौत हो गई।

मामले में पुलिस अब तक आठ लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। हालांकि, सीजेपी नेता का कहना है कि घटना में शामिल सभी आरोपियों की गिरफ्तारी और उनके खिलाफ उचित कानूनी धाराओं के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए। रांका ने कहा कि केवल कुछ गिरफ्तारियों से पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिलेगा और पूरे मामले की निष्पक्ष जांच जरूरी है। उन्होंने पुलिस की कार्रवाई पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि इंडास थाने में तैनात पुलिसकर्मियों की भूमिका की भी जांच होनी चाहिए।

रांका ने आरोप लगाया कि घटना के बाद पीड़ित परिवार को पुलिस और प्रशासन से अपेक्षित सहायता नहीं मिली। उन्होंने मामले की जांच अदालत की निगरानी में कराने की मांग की, ताकि जांच की निष्पक्षता पर कोई सवाल न उठे। उनके मुताबिक, परिवार ने सरकारी मुआवजा लेने से भी इनकार किया है। सीजेपी नेता ने कहा कि पार्टी पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है और न्याय मिलने तक इस मुद्दे को उठाती रहेगी।

मृतक के बेटे अब्दुल हाफिज ने अपने पिता की स्मृति में उसी स्थान पर एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्कूल बनाने की मांग भी रखी है। उनका कहना है कि उनके पिता को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था से जुड़े मुद्दों को भी सामने रखते हुए कहा कि स्कूलों की बदहाली और शिक्षा की स्थिति को लेकर समाज में व्यापक जागरूकता की जरूरत है। रांका ने हाफिज को आर्थिक सहायता देने का आश्वासन दिया और इसी मुद्दे को व्यापक स्तर पर उठाने के लिए राज्यव्यापी 'स्कूल ठीक करो' अभियान शुरू करने की घोषणा की।

घटना के बाद पश्चिम बंगाल में राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी तेज हो गए हैं। सीपीआई(एम) नेता शतरूप घोष ने भी पीड़ित परिवार से मुलाकात की और घटना को लेकर भाजपा तथा उसके राज्य नेतृत्व पर आरोप लगाए। उन्होंने दावा किया कि हमले में भाजपा से जुड़े लोगों की भूमिका हो सकती है। हालांकि, भाजपा ने इन आरोपों से इनकार करते हुए हमले से किसी भी संगठनात्मक संबंध से इंकार किया है।

मामले में पुलिस की ओर से अब तक आठ गिरफ्तारियां की जा चुकी हैं और आगे की जांच जारी है। पुलिस के सामने अब घटना के पीछे की पूरी वजह, हमले में शामिल सभी लोगों की भूमिका और कथित राजनीतिक संबंधों की जांच करने की चुनौती है। वहीं, राजनीतिक दलों के आरोपों के बीच पीड़ित परिवार न्याय और अपने पिता की स्मृति में स्कूल निर्माण की मांग को लेकर सामने आया है।

इस घटना ने एक बार फिर पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा और कानून-व्यवस्था को लेकर बहस को हवा दे दी है। एक ओर विपक्षी दल मामले को लेकर राज्य सरकार और पुलिस प्रशासन पर सवाल उठा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आरोपों को लेकर राजनीतिक दलों के बीच बयानबाजी तेज हो गई है। अब सीजेपी के 10 दिन के अल्टीमेटम के बाद यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि पुलिस और राज्य प्रशासन मामले में आगे क्या कार्रवाई करते हैं और क्या सभी आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग पूरी होती है। फिलहाल बांकुड़ा का यह मामला स्थानीय घटना से आगे बढ़कर राजनीतिक संघर्ष का नया मुद्दा बनता दिखाई दे रहा है।

संपादकीय

नारी उद्यमिता को संबल

हरियाणा सरकार की नई पहल स्वागत योग्य है, जिसके तहत राज्य में महिला स्टार्टअप्स के लिए सात साल तक राज्य जीएसटी राशि फ्री कर दी जाएगी। महत्वपूर्ण यह भी है कि नीति में बदलाव करते हुए सरकार ने कहा है कि महिला उद्यमियों द्वारा 25 लाख रुपये का निवेश करने पर सरकार भी इतना ही योगदान देगी। निश्चित रूप से महिलाएं देश के उद्यमिता क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। उनकी एकाग्रता, समर्पण और साफ-सुथरी व्यवस्था की कॉरपोरेट जगत में प्रशंसा की जाती है। निःसंदेह, हरियाणा सरकार की यह पहल नारी सशक्तीकरण की दिशा में एक रचनात्मक कदम है। सही मायनों में सरकार का यह संबल महिला उद्यमियों के लिए उद्योग जगत में नया आकर्षण लेकर आएगा। उल्लेखनीय है कि बृहस्पतिवार को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में 'हरियाणा स्टेट स्टार्टअप पॉलिसी 2022' के सप्लीमेंट को मंजूरी दी गई। वहीं दूसरी ओर, सामान्य स्टार्टअप्स को सात साल तक नेट एसजीएसटी की 50 फीसदी प्रतिपूर्ति मिलती रहेगी। इसके अलावा, महिला-नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को एक साल तक लीज रेंट का 50 फीसदी, अधिकतम 10 लाख रुपये तक वापस मिलेगा। इस दिशा में सरकार ने एक रचनात्मक पहल यह की है कि पर्यावरण के अनुरूप ग्राम्य उत्पादों, हस्तशिल्प, आयुर्वेद उत्पादों तथा देशी खाद्य उत्पादों को बढ़ावा देने वाले उद्यमियों को विशेष प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया है। इस क्रम में ऐसे स्टार्टअप्स जो हस्तशिल्प, पारंपरिक वस्त्र, पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों, आयुर्वेद-आधारित स्वास्थ्य एवं वेलनेस उत्पादों और देशी खाद्य उत्पादन से जुड़े हैं, उन्हें 50,000 से 1 लाख रुपये तक की माइक्रो-ग्रांट भी दी जाएगी।

दरसअल, राज्य सरकार ने अनेक प्रोत्साहन कदमों से राज्य में उद्यमिता के अनुकूल माहौल बनाने का भी प्रयास किया है। सरकार ने घोषणा की है कि यदि किसी निजी या एंजल निवेशक से किसी स्टार्टअप को 25 लाख रुपये मिलते हैं, तो सरकार भी 25 लाख रुपये तक की मैचिंग ग्रांट दे सकेगी। निश्चय ही सरकार की यह पहल राज्य में उद्यमिता का विकास करेगी। वहीं दूसरी ओर, सरकार ने भरोसा दिलाया है कि नई तकनीक का लाइसेंस लेने या टेक्नोलॉजी ट्रांसफर के लिए 10 लाख रुपये तक की सहायता मिलेगी। गुणवत्ता प्रमाणन हासिल करने पर खर्च की 50 फीसदी राशि, अधिकतम 25 लाख रुपये तक एक बार वापस की जाएगी। यहां यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि सरकार द्वारा दी जा रही छूट का दुरुपयोग समाज के चतुर-चालक लोग न करने लगें। जैसे देश में 'प्रधान पति' (महिला प्रधानों के पति) खुलेआम कामकाज संभालते नजर आते हैं, कम से कम उद्यमिता के क्षेत्र में ऐसा नहीं होना चाहिए। अक्सर सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ उठाने के लिए परिवार की महिलाओं के नाम पर स्टार्टअप शुरू दिखाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है। महिला सशक्तीकरण तभी संभव है जब महिलाएं खुद आगे आएं और उद्यमिता में कामयाबी के नए मानक स्थापित करें। निःसंदेह, उद्योगों में महिलाओं की यह भागीदारी उस राज्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण होगी, जहां समाज में लिंग-भेद के गहरे आक्षेप रहे हैं।

भारत में पाकिस्तानियों को मिल गई नागरिकता?

> बीते 2022 के विधानसभा चुनाव में इनके साथ वादा किया गया था, जिसे अब पूरा किया गया। प्रदेश सरकार की पहल पर सभी पीड़ित परिवारों को सूचीबद्ध करके नागरिकता और मालिकाना के प्रमाण बांटे गए हैं। नागरिकता करीब 2500 परिवारों को दी गई हैं जिनकी कुल संख्या 15 हजार के आसपार है।

किसी पाकिस्तानी को आज के दौर में हिंदुस्तान में बसाना, उन्हें पनाह देना या फिर नागरिकता देनी वाली बात, शायद ही किसी के गले उतरे? बसाना तो दूर, ऐसा सोचना मात्र भी, सूरज का पूरब की जगह पश्चिम से निकलने जैसा माना जाएगा। पर, यह कोरी कल्पना पिछले दिनों हकीकत में तब्दील हुई। भारत में 56 साल पहले आए पाकिस्तानियों को नागरिकता दी गई है। वह भी एकाध लोगों को नहीं, बल्कि हजारों को। सरकार ने पिछले महीने बकायदा एक रंगारंग कार्यक्रम कर, ढोल-नगाड़े बजाकर विस्थापित पाकिस्तानियों को नागरिकता प्रमाण पत्र बांटे। ताज्जुब यह भी है कि ऐसा चमत्कार हुकूमत ने ऐसे माहौल में किया, जब समूचे भारत में विभिन्न देशों के घुसपैठियों को निकालकर उन्हें खदेड़ने का अभियान केंद्रीय व राज्य स्तरों पर छिड़ा हो। इस अभियान की बानगी हमने हाल में संपन्न हुए पांच राज्यों के विधाानसभा चुनाव के दौरान भी देखा। जब दो बॉर्डर राज्य, असम और पश्चिम बंगाल, का चुनाव इसी मसले के इर्दगिर्द घूमा। घुसपैठियों के अलावा भारत में कुछ वर्षों से एनआरसी और सीएए का भी शोर है। बावजूद इसके सरकार ने पाकिस्तानियों को नागरिकता देने का बड़ा जाखिम उठाया। सरकार ने यह कदम क्यों उठाया? हालांकि, इस फैसले के सियासी मायने बहुतेरे हैं, जिसकी तस्वीर आने वाले दिनों में दिखाई भी देगी। सरकार ने विस्थापितों को नागरिकता हिंदुस्तान के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश में दी है। जिले का नाम है पीलीभीत जो नेपाल बॉर्डर से एकदम सटा हुआ है जिसकी पहचान बांसुरी निमार्ण के अलावा तराई क्षेत्र के लिए भी प्रसिद्ध है। पीलीभीत को मिनी पंजाब भी कहते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य से लबरेज, जैव-विविधता के अलावा विश्व प्रसिद्ध टाइगर रिजर्व तो है ही, धान की पैदावार

के लिए भी जिला पूरे प्रदेश में विख्यात है। सरकार ने जिन परिवारों को बसाने का फैसला किया है उनमें बंगाली हिन्दू, बौद्ध, जैन और सिख शामिल हैं। भारत के नक्शे में देखें, तो पीलीभीत हिंदुस्तान के एक अलहदे छोर पर बसा है जहां करीब पांच दशक से भी ज्यादा पहले पाकिस्तान से आए विस्थापित लोग बस गए थे। तभी, से वह विभिन्न सरकारों से नागरिकता मांगते आए हैं। सरकारी कागजों के मुताबिक पूर्वी पाकिस्तान से वर्ष 1959 से 1971 के बीच पाकिस्तान से पीड़ित होकर कुछेक परिवार भारत आए थे। शुरूआत में यह परिवार कई राज्यों में भटकते रहे, कहीं ठिकाना नहीं मिला। आखिरकार उन्हें बाद में यही जिला मुफीद लगा। पीलीभीत के अलावा कुछ नागरिकता रामपुर और बिजनौर में बसे विस्थापितों को भी दी गई है।

पीलीभीत के जिस क्षेत्र में यह परिवार रहते आए हैं वह जगह कभी विरान होती थी। इन लोगों ने इसे रहने लायक बनाया और उबड़खाबड़ जगहों पर मेहनत करके उसे खेतीबाड़ी के लिए तैयार किया। आज इस क्षेत्र में अच्छी फसलें उगती हैं। सभी के पास कागजी दस्तावेजों के रूप में भारतीय आधार कार्ड, पैन कार्ड, राशन कार्ड इत्यादि पहले से मौजूद हैं। साथ ही लंबे वक्त से मतदान भी करते आए हैं। लेकिन नागरिकता और मालिकाना हक से वंचित थे, जिसे मौजूदा योगी सरकार ने पूरा कर दिया। ये परिवार पीलीभीत जिले के अमरिया, न्यूरिया, शारदा डैम की तलहटी सहित आसपास के क्षेत्रों में बसे हैं। सरकार ने उन्हें खेती और आवास के लिए जमीन तो पहले से दी हुई हैं। लेकिन मालिकाना हैसियत नहीं दी, जिसके लिए यह लोग दशकों जद्दोजहद कर रहे थे। प्रत्येक चुनावों में इनसे के झूठा आश्वासन हुआ। पूर्ववर्ती बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी की सरकारों ने भी इनको नागरिकता दिलवाने का दिलासा दिया। पर, कुछ राजनैतिक अड़चनों के चलते वादा पूरा नही ंकर पाए।

बीते 2022 के विधानसभा चुनाव में इनके साथ वादा किया गया था, जिसे अब पूरा किया गया। प्रदेश सरकार की पहल पर सभी पीड़ित परिवारों को सूचीबद्ध करके नागरिकता और मालिकाना के प्रमाण बांटे गए हैं। नागरिकता करीब 2500 परिवारों को दी गई हैं जिनकी कुल संख्या 15 हजार के आसपार है। ऐसा करके सरकार ने शायद विपक्षी दलों को बड़ा सियासी मुद्दा बैठे-बिठाए थमा दिया है। ये लोग वर्ष 1960 से 1975 के बीच धार्मिक प्रताड़ना के चलते पूर्वी बंगालादेश जो अब पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा है, से भारत आए थे और उत्तर प्रदेश के तराई के जिले पीलीभीत में आकर बसे। ये क्षेत्र पीलीभीत जिले की कलीनगर व पूरनपुर तहसीलों में आते हैं जहां ये करीब 25-26 गांवों में बसे हैं। पिछले महीने 29 जून को सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का जिले में दौरा हुआ जिसमें मुख्यमंत्री ने इनको ना सिर्फ नागरिकता के प्रमाण पत्र बांटे, बल्कि मालिकाना हक के सरकारी कागज भी दिए।

यह फैसला चुनाव के ऐन वक्त लिया गया। प्रदेश में मात्र 6-7 महीनों बाद विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसलिए सरकार के इस निर्णय पर प्रदेश की राजनीति जमकर गर्माई हुई है। विपक्षी पार्टियों ने सीधे-सीधे एक बड़े वोटबैंक को साधने का आरोप मौजूदा सरकार पर लगाया है। पाकिस्तानी विस्थापियों को बसाने का यह पहला चरण है, अभी दूसरा चरण शेष है। 35 हजार लोग और हैं जो बहराईच, बाराबंकी, गोंडा, लखीमपुर, बिजनौर जैसे जिलों में बसे हैं। सभी को चिंहित किया जा चुका है, अगले कुछ महीनों बाद इन्हें भी मुकम्मल नागरिकता देने का फैसला हो चुका है। सरकारी आंकड़ों की माने तो प्रदेश के करीब सात-आठ जिलों में कुल 55 हजार विस्थापित पाकिस्तानियों की आबादी है, इनमें प्रत्येक वर्ष तेजी से इजाफा भी हो रहा है। 56 वर्ष पहले धार्मिक प्रताड़ना के रूप में मात्र 12 हजार 380 लोग आए थे। आबादी बढ़ाने के पीछे इनका मकसद था कि बढ़ी आबादी से सरकारों को वोटिंग का लालच देकर किसी भी दल पर दबाव बना सकेंगे। कमोबेश, हुआ भी वैसा ही। अपने योजनाओं में यह लोग आज सफल हुए हैं।

प्रेरणा

दर्द से शक्ति तक : जब इंसान अपना दुख भगवान को सौंप देता है

महाभारत का युद्ध केवल अस्त्र-शस्त्रों का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह मनुष्य के भीतर चलने वाले धर्म, कर्तव्य, पीड़ा, मोह और जीवन के संघर्ष का भी प्रतीक था। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में जब भीष्म पितामह बाणों की शय्या पर लेटे थे, तब उनके शरीर में असंख्य बाण चुभे हुए थे, लेकिन उनके मन में उससे भी गहरी पीड़ा थी। जिस हस्तिनापुर के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था, उसी हस्तिनापुर के विनाश को वे अपनी आंखों के सामने देख रहे थे। उन्होंने जीवनभर सुख, विवाह और राजसिंहासन का त्याग किया था, फिर भी अंत में उन्हें बाणों की शय्या ही मिली। ऐसे समय में मनुष्य के भीतर एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर इतनी निष्ठा और त्याग के बाद भी दुख क्यों मिला?

कल्पना कीजिए, उस समय भीष्म पितामह भगवान श्रीकृष्ण की ओर देखते हैं और अपने मन की व्यथा व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए विवाह का त्याग किया, राजपाट का त्याग किया और आजीवन हस्तिनापुर की सेवा को अपना धर्म माना। उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख को कभी महत्व नहीं दिया, फिर भी जीवन के अंतिम पड़ाव पर उनके हिस्से में इतना कष्ट क्यों आया? उनके प्रश्न में केवल शारीरिक पीड़ा नहीं थी, बल्कि वर्षों से दबा हुआ वह दर्द था जिसे उन्होंने कभी किसी के सामने प्रकट नहीं किया था।

श्रीकृष्ण उनकी बात सुनते हैं। वे जानते थे कि संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके जीवन में संघर्ष न आया हो। किसी का दुख दिखाई देता है, किसी का भीतर छिपा रहता है। कोई अपनी पीड़ा शब्दों में व्यक्त कर देता है, तो कोई मुस्कुराहट के पीछे अपना दर्द छिपाकर जीवन आगे बढ़ाता रहता है।

श्रीकृष्ण का जीवन भी संघर्षों से भरा था। उनका जन्म राजमहल में नहीं, बल्कि कारागार में हुआ। जन्म लेते ही उन्हें अपने माता-पिता से अलग होना पड़ा। उनका बचपन अपने माता-पिता की गोद में नहीं, बल्कि परिस्थितियों के बीच बीता। जिस मामा को परिवार का संरक्षक होना चाहिए था, वही उनके जीवन का सबसे बड़ा शत्रु बन गया। बचपन से ही उनके सामने मृत्यु का खतरा मंडराता रहा। उन्हें बार-बार संकटों का सामना करना पड़ा और अंततः अपने प्रिय लोगों और स्थानों से भी दूर होना पड़ा।

वृंदावन की गलियां, ग्वाल-बालों का साथ, राधा और गोपियों का प्रेम, यमुना का किनारा—ये सब उनके जीवन के अत्यंत प्रिय अध्याय थे। लेकिन जीवन किसी को हमेशा उसकी पसंद के स्थान पर रहने की अनुमति नहीं देता। श्रीकृष्ण को मथुरा जाना पड़ा। फिर परिस्थितियों ने उन्हें मथुरा भी छोड़ने पर विवश किया। उन्होंने द्वारका बसाई और जीवन को नई दिशा दी। उनके जीवन में भी बिछड़ना था, संघर्ष था और जिम्मेदारियों का भार था।

फिर भी श्रीकृष्ण मुस्कुराते रहे।

उनकी मुस्कान का अर्थ यह नहीं था कि उन्हें दर्द नहीं होता था। मुस्कान का अर्थ यह था कि उन्होंने अपने दर्द को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। उन्होंने परिस्थितियों को स्वीकार किया और अपने कर्तव्य को आगे रखा। यही जीवन का सबसे बड़ा संदेश है।

मनुष्य अक्सर अपने दुख को लेकर दूसरों से शिकायत करता है। उसे लगता है कि उसके साथ ही अन्याय क्यों हुआ। कोई कहता है कि मैंने इतना अच्छा किया, फिर मेरे साथ बुरा क्यों हुआ? किसी को लगता है कि मैंने ईमानदारी से रिश्ते निभाए, फिर भी मुझे धोखा क्यों मिला? कोई वर्षों मेहनत करता है, लेकिन सफलता किसी और के हिस्से में चली जाती है। कोई परिवार के लिए अपना जीवन लगा देता है, फिर भी अकेलापन उसके हिस्से में आता है। ऐसे क्षणों में व्यक्ति अपने भाग्य को दोष देने लगता है।

लेकिन जीवन हमें सिखाता है कि दुख केवल उसी के हिस्से में नहीं आता जो गलत है। कई बार अच्छे लोगों को भी कठिन रास्तों से गुजरना पड़ता है। संघर्ष हमेशा सजा नहीं होता; कई बार वही संघर्ष मनुष्य के व्यक्तित्व को मजबूत बनाता है।

दर्द मनुष्य को तोड़ भी सकता है और उसे भीतर से इतना मजबूत भी बना सकता है कि फिर कोई परिस्थिति उसे आसानी से हिला न सके। अंतर इस बात से पड़ता है कि हम अपने दर्द के साथ क्या करते हैं। यदि हम उसे अपने भीतर शिकायत बनाकर रखते हैं, तो वही दर्द धीरे-धीरे हमारी शक्ति छीनने लगता है। लेकिन यदि हम उसे ईश्वर के चरणों में समर्पित कर दें, तो मन हल्का होने लगता है।

भगवान को अपना दर्द सौंपने का अर्थ यह नहीं कि हम प्रयास करना छोड़ दें। इसका अर्थ है कि हम अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी से करें और परिणाम की चिंता ईश्वर पर छोड़ दें। जो हमारे हाथ में है, उसके लिए प्रयास करें और जो हमारे नियंत्रण में नहीं है, उसे स्वीकार करने की शक्ति मांगें।

भीष्म पितामह का जीवन भी इसी सत्य का प्रतीक है। उन्होंने प्रतिज्ञा निभाई, कर्तव्य निभाया और अपने जीवन का बड़ा हिस्सा हस्तिनापुर के लिए समर्पित किया। फिर भी उनके जीवन में अनेक ऐसे निर्णय और परिस्थितियां आईं जिनका परिणाम उनके मन के अनुसार नहीं था। लेकिन अंतिम समय में भी उन्होंने ज्ञान और धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा। बाणों की शय्या पर पड़े हुए भी उन्होंने संसार को जीवन का ज्ञान दिया।

यही कारण है कि हमें अपने दुख को अपनी पहचान नहीं बनने देना चाहिए। हम दुखी हो सकते हैं, रो सकते हैं, टूट सकते हैं, कुछ समय के लिए थक सकते हैं—लेकिन वहीं रुक जाना जीवन नहीं है। आंसू कमजोरी का प्रमाण नहीं हैं। मनुष्य रो सकता है और फिर भी मजबूत हो सकता है। उसे दर्द हो सकता है और फिर भी वह दूसरों के लिए मुस्कुरा सकता है।

कभी-कभी हम दूसरों को देखकर सोचते हैं कि उनका जीवन कितना सुखी है। लेकिन हम केवल उनका बाहरी जीवन देखते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी का लालकिले से 'विकसित भारत' का संकल्प

ऐतिहासिक लालकिले की प्राचीर केवल पत्थरों की एक संरचना नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र भारत के उतार-चढ़ाव, उसकी आकांक्षाओं, उसकी नियति और उसके सामूहिक संकल्पों की मूक गवाह रही है। हर वर्ष 15 अगस्त को इस प्राचीर से देश के प्रधानमंत्री जब राष्ट्र को संबोधित करते हैं, तो वह केवल एक औपचारिक भाषण नहीं होता, बल्कि वह आने वाले समय के लिए देश का नीतिगत और वैचारिक रोडमैप होता है। स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसी ऐतिहासिक प्राचीर से वर्ष 2047 तक भारत को एक 'विकसित राष्ट्र' बनाने का जो अटूट संकल्प दोहराया है, वह देश की समकालीन राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज के लिए एक युगांतकारी मोड़ है। 'विकसित भारत' का यह विजन महज़ एक राजनीतिक नारा नहीं है, बल्कि यह 140 करोड़ नागरिकों की सामूहिक चेतना को जगाने और उन्हें राष्ट्र निर्माण के एक महायज्ञ में आहुति देने के लिए प्रेरित करने वाला एक व्यापक राष्ट्रीय दर्शन है। जब हम इस विराट संकल्प की बात करते हैं, तो हमें इसके ऐतिहासिक संदर्भ और प्रासंगिकता को गहराई से समझना होगा। भारत ने लगभग दो सदियों तक औपनिवेशिक दासता और आर्थिक शोषण का दंश झेला है। 1947 में जब देश स्वतंत्र हुआ, तब हमारी अर्थव्यवस्था जर्जर थी, साक्षरता दर दयनीय थी और अकाल तथा गरीबी जैसी बुनियादी चुनौतियां हमारे सामने थीं। शुरुआती दशकों में भारत का मुख्य ध्यान आत्मनिर्भरता और बुनियादी अस्तित्व की रक्षा पर था। हमने खाद्यान्न संकट से निपटने के लिए हरित क्रांति की, अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए सैन्य तंत्र को मजबूत किया और धीरे-धीरे एक ठोस औद्योगिक आधार तैयार किया। आज, स्वतंत्रता के इस दौर में, भारत उस स्थिति से बहुत आगे निकल चुका है और अब हम केवल एक अस्तित्व बनाए रखने वाले देश नहीं हैं, बल्कि हम वैश्विक पटल पर एक नई दिशा तय करने वाले राष्ट्र बन चुके हैं। यह संकल्प इस बात का प्रतीक है कि अब भारत अपनी विकासशील छवि के खोल को तोड़कर वैश्विक शक्तियों की अग्रिम पंक्ति में खड़े होने के लिए पूरी तरह तैयार है। 2047 का वर्ष इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष होगा, और कोई भी राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने पर दुनिया के सामने अपनी सफलता का क्या प्रमाण प्रस्तुत करता है, यही उसका वास्तविक ऐतिहासिक मूल्यांकन होता है। इस व्यापक संकल्प को धरातल पर उतारने के लिए देश के चार प्रमुख वर्गों को विकास का मुख्य केंद्र बिंदु बनाया गया है, जिन्हें युवा, महिला, किसान और गरीब के रूप में रेखांकित किया गया है। इन चारों स्तंभों के समग्र सशक्तिकरण के बिना किसी भी विकसित समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। भारत आज दुनिया का सबसे युवा देश है और हमारी जनसांख्यिकीय लाभांश हमारी सबसे बड़ी ताकत है। विकसित भारत का सपना तभी सच हो सकता है जब इस युवा ऊर्जा को सही दिशा, उत्कृष्ट शिक्षा और वैश्विक स्तर का कौशल मिले। देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम का तेजी से विस्तार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाना इसी दिशा में उठाए गए बड़े कदम हैं। इसके साथ ही, विकसित भारत का दूसरा अनिवार्य पहलू महिलाओं का सशक्तिकरण और उनके नेतृत्व में होने वाला विकास है। जब तक देश की आधी आबादी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से पूरी तरह सक्रिय नहीं होगी, तब तक विकास की रफ्तार अधूरी रहेगी। सेनाओं में महिलाओं की भागीदारी से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती महिलाओं की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि वे अब नीति निर्धारण के केंद्र में आ रही हैं। इसी तरह, भारत की आत्मा आज भी गांवों में बसती है और हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है। विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए कृषि क्षेत्र में तकनीकी सुधार, आधुनिक खेती को बढ़ावा और वैश्विक कृषि आपूर्ति श्रृंखला में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाना आवश्यक है। किसान जब पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर आधुनिक कृषि-उद्यमी बनेगा, तभी ग्रामीण भारत समृद्ध होगा। अंत में, अंत्योदय की भावना के अनुरूप समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचना चाहिए, क्योंकि किसी भी राष्ट्र को तब तक विकसित नहीं कहा जा सकता जब तक कि बहुआयामी गरीबी का पूरी तरह उन्मूलन न हो जाए और हर नागरिक को सम्मानजनक जीवन स्तर न मिल जाए।

आर्थिक मोर्चे पर, भारत आज दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और शीर्ष वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की ओर अग्रसर है। लेकिन विकसित देश बनने के लिए हमें केवल सकल घरेलू उत्पाद के आकार को ही नहीं बढ़ाना है, बल्कि प्रति व्यक्ति आय और नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में भी गुणात्मक सुधार करना होगा। इसके लिए विनिर्माण और आत्मनिर्भरता पर विशेष बल देना आवश्यक है। 'मेक इन इंडिया' अभियान के तहत भारत आज मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग, रक्षा उत्पादन और इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभर रहा है। रक्षा क्षेत्र में, जहां कभी हम पूरी तरह आयातों पर निर्भर थे, आज हम स्वदेशी अत्याधुनिक सैन्य उपकरणों का निर्माण कर रहे हैं और उनका निर्यात भी बढ़ा रहे हैं। भारतीय कॉर्पोरेट जगत को अब वैश्विक कंपनियों की तर्ज पर अपनी क्षमता का विस्तार करना होगा ताकि भारतीय ब्रांड दुनिया भर के बाजारों में अग्रणी भूमिका निभा सकें। इसके साथ ही, देश के बुनियादी ढांचे का कायाकल्प किया जा रहा है। आधुनिक रेलवे, एक्सप्रेसवे का विस्तृत नेटवर्क, जलमार्गों का विकास और हवाई अड्डों का आधुनिकीकरण देश की लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने और व्यापार को सुगम बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एक मजबूत और आधुनिक बुनियादी ढांचा ही विकसित भारत की ठोस नींव बनेगा, जो देश के औद्योगिक विकास को नई गति प्रदान करेगा।

तकनीक और नवाचार के इस युग में जो देश अग्रणी रहेगा, वही दुनिया के भविष्य को दिशा देगा। भारत ने डिजिटल क्षेत्र में जो क्रांति की है, उसने दुनिया के विकसित देशों को भी अचंभित किया है। हमारा डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल लेनदेन की व्यवस्था आज वैश्विक स्तर पर एक मिसाल बन चुकी है।

अभियान

जहां नागराज ने पाई शांति, वहीं आज भी गूंजती है आस्था की पुकार

प्रयागराज को भारत की आध्यात्मिक चेतना का एक ऐसा केंद्र माना जाता है, जहां आस्था की अनेक धाराएं एक साथ मिलती हैं। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम इस नगर को तीर्थराज की प्रतिष्ठा देता है। यहां आने वाला श्रद्धालु केवल नदियों के पवित्र संगम में स्नान नहीं करता, बल्कि उन अनगिनत धार्मिक परंपराओं से भी जुड़ता है, जिनकी स्मृतियां सदियों से इस भूमि के साथ चली आ रही हैं। प्रयाग की इसी प्राचीन धार्मिक परंपरा में गंगा तट पर दारागंज क्षेत्र में स्थित नाग वासुकी मंदिर का विशेष स्थान है। नागराज वासुकी को समर्पित यह मंदिर अपने धार्मिक महत्व, पौराणिक कथाओं और प्राचीन मान्यताओं के कारण देशभर के श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

नाग वासुकी का नाम भारतीय पुराण परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। धार्मिक कथाओं के अनुसार वे महर्षि कश्यप के पुत्र और नागों के राजा थे। शेषनाग सहित अनेक प्रसिद्ध नागों के साथ उनका उल्लेख विभिन्न पौराणिक प्रसंगों में मिलता है। भगवान शिव से भी उनका गहरा संबंध माना गया है। शिव के गले में नाग का सुशोभित होना सनातन परंपरा में भय पर विजय, प्रकृति पर नियंत्रण और निर्भयता का प्रतीक माना जाता है। नाग वासुकी को भगवान शिव का परम भक्त कहा जाता है और इसी कारण शिवभक्तों के बीच भी उनकी विशेष प्रतिष्ठा है।

नाग वासुकी से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कथा समुद्र मंथन की है। देवताओं और असुरों के सामने जब अमृत प्राप्त करने की चुनौती आई, तब भगवान विष्णु की प्रेरणा से क्षीरसागर का मंथन करने का निर्णय लिया गया। मंदराचल पर्वत को मथानी बनाया गया और नागराज वासुकी को मंथन की रस्सी के रूप में इस्तेमाल किया गया। देवताओं और असुरों ने वासुकी के शरीर को पकड़कर पर्वत को खींचना शुरू किया। समुद्र का मंथन आसान कार्य नहीं था। लंबे समय तक चले इस प्रयास में वासुकी के शरीर पर अत्यधिक दबाव पड़ा। पौराणिक कथा में वर्णित है कि मंथन के घर्षण से नागराज अत्यंत पीड़ित और थक गए।

समुद्र मंथन के दौरान अनेक अद्भुत वस्तुएं और शक्तियां प्रकट हुईं। इसी मंथन से हलाहल विष भी निकला, जिसे संसार की रक्षा के लिए भगवान शिव ने अपने कंठ में धारण किया। अमृत सहित अनेक दिव्य रत्नों की प्राप्ति हुई। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में नागराज वासुकी ने जो कष्ट सहा, वह भी इस कथा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। उनके शरीर पर पड़े घर्षण और लगातार खिंचाव के कारण उन्हें विश्राम की आवश्यकता हुई।

धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु ने नागराज को तीर्थराज प्रयाग जाने का निर्देश दिया। कहा जाता है कि गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम की आध्यात्मिक ऊर्जा से वासुकी की पीड़ा शांत हुई और उन्हें स्वास्थ्य तथा शांति प्राप्त हुई। इसके बाद उन्होंने प्रयाग को अपना निवास बना लिया। इसी मान्यता से प्रयागराज में नाग वासुकी की पूजा की परंपरा जुड़ी हुई है। गंगा तट पर स्थित उनका मंदिर श्रद्धालुओं के लिए इस कथा की जीवंत स्मृति बन गया है। इस कथा में एक गहरा आध्यात्मिक संदेश भी छिपा है। समुद्र मंथन केवल देवताओं और असुरों का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह जीवन के संघर्ष का प्रतीक भी माना जा सकता है। जब जीवन का मंथन होता है, तो उसमें सुख के साथ दुख भी निकलता है। कभी विष सामने आता है तो कभी अमृत। कभी मनुष्य को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और कभी वही संघर्ष उसे नई शक्ति देता है। नाग वासुकी की कथा भी बताती है कि लंबे संघर्ष के बाद विश्राम और शांति का समय जरूर आता है। प्रयाग में नाग वासुकी के निवास से जुड़ी एक अन्य धार्मिक कथा काशी से संबंधित है। कहा जाता है कि काशी के राजा दिवोदास ने नागराज वासुकी को अपनी नगरी में लाने के लिए कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर वासुकी काशी जाने के लिए तैयार हुए, लेकिन देवताओं ने उन्हें प्रयाग में ही रहने के लिए कहा। प्रयाग की पवित्रता और संगम की महिमा को देखते हुए नागराज ने यहां निवास स्वीकार किया। धार्मिक परंपरा में यह भी कहा जाता है कि उन्होंने प्रयाग में रहने के लिए कुछ विशेष शर्तें रखीं।

मान्यता है कि जो व्यक्ति त्रिवेणी संगम में स्नान करने आए, वह स्नान के बाद नाग वासुकी के दर्शन अवश्य करे। इस परंपरा को आज भी कई श्रद्धालु अत्यंत श्रद्धा से निभाते हैं। दूसरी मान्यता नाग पंचमी से जुड़ी है। श्रावण मास की शुक्ल पक्ष पंचमी के दिन नागराज की विशेष पूजा करने की परंपरा है। नाग पंचमी के अवसर पर मंदिर में भक्तों की संख्या बढ़ जाती है। लोग नाग देवता को दूध, जल, पुष्प और अन्य पूजन सामग्री अर्पित करते हैं तथा परिवार की सुख-समृद्धि और रक्षा की प्रार्थना करते हैं।

नाग वासुकी मंदिर की प्राचीनता भी इसकी धार्मिक प्रतिष्ठा को और बढ़ाती है। लोकमान्यताओं में इसे महाभारत काल से जोड़कर देखा जाता है। एक धार्मिक परंपरा के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण भी यहां नाग वासुकी के दर्शन करने आए थे। वर्तमान मंदिर के स्वरूप और इसके विकास को अलग-अलग ऐतिहासिक कालखंडों से जोड़ा जाता है। मंदिर के जीर्णोद्धार और विस्तार से संबंधित कई स्थानीय परंपराएं भी प्रचलित हैं। मराठा काल में इसके विस्तार की चर्चा भी मिलती है।

मंदिर के गर्भगृह में नाग वासुकी की प्रतिमा श्रद्धालुओं के लिए मुख्य आकर्षण है। परिसर में गणेश जी, हनुमान जी और अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी आस्था का केंद्र हैं। प्राचीन मूर्तियां और मंदिर की स्थापत्य विशेषताएं इसकी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत की झलक प्रस्तुत करती हैं। परिसर में स्थित पुराने वृक्ष भी मंदिर के वातावरण को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करते हैं। गंगा तट की निकटता इस स्थान की धार्मिक अनुभूति को और गहरा करती है।

नाग वासुकी मंदिर का उल्लेख प्रयाग की तीर्थ परंपरा से जुड़े धार्मिक साहित्य में भी मिलता है। स्कंद पुराण में प्रयाग के अनेक तीर्थों का वर्णन किया गया है और नाग वासुकी क्षेत्र को नागह्रद तीर्थ से जोड़ा जाता है। इसी धार्मिक मान्यता के कारण यहां नाग पूजा को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि नाग वासुकी की आराधना करने से जीवन में आने वाली अनेक बाधाओं से राहत मिलती है और परिवार की रक्षा होती है।

कालसर्प दोष को लेकर भी इस मंदिर में विशेष आस्था दिखाई देती है। अनेक श्रद्धालु अपनी जन्मकुंडली में बताए गए कालसर्प योग या अन्य ज्योतिषीय दोषों से संबंधित धार्मिक अनुष्ठान कराने यहां आते हैं। इसके अलावा पूर्वजों की शांति के लिए त्रिपिंडी श्राद्ध और कुछ विशेष परिस्थितियों में नारायण बलि जैसे कर्मकांड भी कराए जाते हैं। ये सभी धार्मिक परंपराएं श्रद्धालुओं की आस्था और मान्यताओं से जुड़ी हैं। इनके माध्यम से लोग अपने पूर्वजों को स्मरण करते हैं और जीवन में शांति तथा सकारात्मकता की कामना करते हैं।

श्रावण मास में इस मंदिर का वातावरण विशेष रूप से भक्तिमय हो जाता है। भगवान शिव की आराधना के साथ नाग देवता की पूजा का महत्व बढ़ जाता है। नाग पंचमी के दिन दूर-दूर से श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। मंदिर के आसपास धार्मिक गतिविधियां बढ़ जाती हैं और भक्त घंटियों की ध्वनि तथा मंत्रोच्चार के बीच नागराज के दर्शन करते हैं। कई श्रद्धालु संगम स्नान के बाद मंदिर पहुंचते हैं और जल, पुष्प तथा पूजन सामग्री अर्पित कर अपनी मनोकामनाएं रखते हैं। कुंभ और महाकुंभ के अवसर पर प्रयागराज में श्रद्धालुओं की संख्या असाधारण रूप से बढ़ जाती है। देश-विदेश से आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए संगम स्नान के साथ प्रयाग के प्रमुख मंदिरों के दर्शन भी धार्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। नाग वासुकी मंदिर भी इस तीर्थ परंपरा में अपनी अलग पहचान रखता है। श्रद्धालु मानते हैं कि संगम की पवित्रता और नागराज की आराधना उनके तीर्थ अनुभव को पूर्णता प्रदान करती है।

नाग वासुकी मंदिर से जुड़ी एक लोकप्रिय लोककथा मुगल काल से भी संबंधित है। कहा जाता है कि औरंगजेब ने प्रयागराज में इस मंदिर की प्रसिद्धि के बारे में सुना और मंदिर की प्रतिमा को नष्ट करने का प्रयास किया। लोककथा के अनुसार जैसे ही उसने प्रतिमा पर प्रहार करने का प्रयास किया, वह वहीं बेहोश हो गया और बाद में मंदिर को नुकसान पहुंचाए बिना लौट गया।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

एआई इकोसिस्टम को अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा ऑटोमेशन एनीव्हेयर के बीच मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया की उपस्थिति में गांधीनगर में एमओयू हुआ

ऑटोमेशन एनीव्हेयर द्वारा राज्य में युवाओं को प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और एआई संबंधी पहल के लिए 10 वर्षों में लगभग 100 करोड़ रुपए तक का सहयोग प्रदान किया जाएगा

गांधीनगर : राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), एजेंटिक ऑटोमेशन, इंटेलिजेंट ऑटोमेशन तथा रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (आरपीए) जैसे अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी क्षेत्रों में कार्यरत अग्रणी वैश्विक कंपनी 'ऑटोमेशन एनीव्हेयर' के साथ विभाग के मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया की विशेष उपस्थिति में गांधीनगर में एमओयू किया गया। इस अवसर पर ऑटोमेशन एनीव्हेयर की ओर से को-फाउंडर तथा सीओओ श्री अंकुर कोठारी उपस्थित रहे।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर देश के लगभग 1 करोड़ युवाओं को एआई प्रशिक्षण देकर सुसज्जित करने की घोषणा की है। गुजरात में भी एआई इकोसिस्टम को अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में एआई के संबंध में जागरूकता, क्षमता निर्माण (कैपेसिटी बिल्डिंग) तथा सरकार-उद्योग-शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को और मजबूत बनाने के लिए यह एमओयू किया गया है।

श्री मोढवाडिया ने कहा कि इस सहयोग के अंतर्गत गुजरात के विद्यार्थियों, युवाओं, सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों, एमएसएमईस, स्टार्टअप्स तथा शैक्षणिक संस्थानों के लिए एआई/एमएल के संबंध में जागरूकता और क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसके अलावा; प्रशिक्षण कार्यक्रम, वर्कशॉप, सेमिनार, वेबिनार, बूटकैंप तथा सर्टिफिकेशन आधारित कोर्स का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने इस अवसर पर एमओयू के लिए

ऑटोमेशन एनीव्हेयर के पदाधिकारियों को अभिनंदन दिया।

ऑटोमेशन एनीव्हेयर द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ

इस सहयोग के अंतर्गत ऑटोमेशन एनीव्हेयर द्वारा युवाओं में प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और एआई संबंधी पहल के लिए 10 वर्ष की अवधि में लगभग 100 करोड़ रुपए तक का सहयोग प्रदान किया जाएगा।

कंपनी द्वारा गुजरात में एआई/एमएल तथा इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग दिया जाएगा तथा कंपनी ट्रेनर्स, सब्जेक्ट मैटर एक्सपर्ट्स और मेंटर्स अपने खर्च पर उपलब्ध कराएगी।

इसके अलावा; ऑटोमेशन एनीव्हेयर द्वारा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, लर्निंग कंटेंट तथा सर्टिफिकेशन फ्रेमवर्क भी उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ ही; प्रशिक्षुओं को प्रायोगिक अनुभव मिले; इसके लिए ऑटोमेशन एनीव्हेयर के नॉन-कोड/लॉ-कोड ऑटोमेशन सक्सेस प्लेटफॉर्म के कम्युनिटी एडिशन लाइसेंस उपलब्ध कराए जाएंगे।

राज्य सरकार की भूमिका

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा विभिन्न सरकारी विभागों, शैक्षणिक संस्थानों, युवाओं, उद्योग संगठनों, स्टार्टअप्स तथा अन्य हितधारकों के साथ समन्वय किया जाएगा। जहाँ संभव हो, वहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए स्थान एवं आवश्यक ढाँचागत सुविधाएँ उपलब्ध कराए जाएंगे।

अपेक्षित परिणाम

इस एमओयू के माध्यम से गुजरात में एआई और इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस के क्षेत्र में कुशल मानवबल तैयार करने तथा सरकार, उद्योग और शैक्षणिक क्षेत्र के बीच अधिक मजबूत सहयोग विकसित करने में सहायता मिलेगी। विद्यार्थियों, सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों, एमएसएमईस और स्टार्टअप्स में एआई, ऑटोमेशन तथा अन्य इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस के बारे में जागरूकता बढ़ेगी।

गुजरात को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस, इनोवेशन और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन क्षेत्रों में अग्रणी राज्य के रूप में विकसित करने की दिशा में यह एमओयू एक और महत्वपूर्ण कदम है।

इस अवसर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) से आईसीटी एवं ई-गवर्नेंस की निदेशक श्री कविता शाह, जबकि ऑटोमेशन एनीव्हेयर की ओर से एसवीपी-एपीजे श्री संजय रोहतगी, स्ट्रैटेजिस बिजनेस डायरेक्टर श्री नेविले शुक्ला उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात का प्रतिनिधिमंडल सैन फ्रांसिस्को पहुँचा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात प्रतिनिधिमंडल सोमवार को सैन फ्रांसिस्को पहुँचा।

मुख्यमंत्री का सैन फ्रांसिस्को एयरपोर्ट पर गुजराती समुदाय के अग्रणियों ने भारतीय तिरंगे के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया।

मुख्यमंत्री सैन फ्रांसिस्को के गुजराती समुदायों के साथ बैठक से अपने यूएस दौरे का प्रारंभ करने वाले हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की यूएस यात्रा : प्रथम दिन

मुख्यमंत्री ने सैन फ्रांसिस्को के गुजराती समुदायों के साथ बैठक तथा संवाद से यात्रा प्रारंभ की

▶▶ राज्य के सर्वांगीण विकास के विषय में जानने के लिए गुजराती समुदायों में उत्सुकता मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▶▶ सिलिकॉन वैली में गुजराती डायस्पोरा का सेमीकंडक्टर, एआई टेक्नोलॉजी एवं इनोवेशन के उभरते क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान अभिनंदन योग्य है

▶▶ इन वैश्विक प्रतिभाओं को गुजरात स्थित उद्योगों के साथ जोड़कर टेक्नोलॉजी सहयोग को अधिक सुदृढ़ बनाने की मंशा है

▶▶ सेमीकंडक्टर, एआई, डेटा सेंटर तथा बायोटेक्नोलॉजी जैसे न्यू एज सेक्टर्स में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से गुजरात ग्लोबल हब बनकर प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन को साकार करेगा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमवार को यूएस के सैन फ्रांसिस्को में गुजराती डायस्पोरा के साथ बैठक और संवाद आयोजित कर अपनी यूएस यात्रा का प्रारंभ किया।

आगामी वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2027 में यूएस और कनाडा के उद्योग-निवेशकों को सहभागी होने तथा गुजरात में निवेश-उद्योग स्थापना के लिए आमंत्रित करने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ यूएस एवं कनाडा की साप्ताहिक यात्रा पर हैं।

मुख्यमंत्री ने इस संदर्भ में सैन फ्रांसिस्को में रहने वाले गुजराती समुदायों के साथ बैठक आयोजित कर गुजरात की प्रभावशाली वैश्विक विकास गाथा प्रस्तुत की।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ देश को विकास की जो गति दी है, उसमें गुजरात देश के सर्वांगीण विकास के ग्रोथ इंजन के रूप में स्थापित हुआ है।

इतना ही नहीं; श्री पटेल ने कहा कि विकसित भारत-2047 का जो संकल्प प्रधानमंत्री ने किया है, उसमें भी विकसित गुजरात-2047 से लीड लेने का हमारा संकल्प है।

उन्होंने जोड़ा कि गुजरात सेमीकंडक्टर, एआई, डेटा सेंटर और बायोटेक्नोलॉजी जैसे न्यू एज सेक्टर्स में हब बनकर प्रधानमंत्री के विकसित भारत का यह संकल्प विकसित गुजरात से साकार करेगा। आगामी वाइब्रेंट समिट-2027 इसके लिए एक और सक्षम प्लेटफॉर्म बनेगा, ऐसा विश्वास व्यक्त करते हुए

उन्होंने सैन फ्रांसिस्को के गुजरात समुदायों तथा उद्योग-व्यापार के अग्रणियों को इस समिट में जुड़ने का आमंत्रण भी दिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ गुजराती समुदाय के लोगों ने प्रश्नोत्तरी कर राज्य के सर्वांगीण विकास की गति और प्रगति की जानकारी प्राप्त करने में बहुत उत्सुकता दिखाई। इन अग्रणियों ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई गुजरात की निरंतर विकास यात्रा को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में और अधिक गति मिली है, इसके लिए किए जा रहे सफल एवं परिणामदायी प्रयासों की भी सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजराती समुदायों, विशेषकर सिलिकॉन वैली में सेमीकंडक्टर, एआई टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के उभरते क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान की प्रशंसा की।

उन्होंने इस संदर्भ में कहा कि ऐसी वैश्विक प्रतिभाओं और उनके गृह राज्य गुजरात की कंपनियों तथा उद्योगों के बीच एक सुदृढ़ सेतु गुजरात सरकार बनाना चाहती है। उन्होंने जोड़ा कि इसके परिणामस्वरूप नॉलेज शेयरिंग, टेक्नोलॉजी सहयोग और मार्गदर्शन के नए वैश्विक अवसर राज्य में खुलेंगे और विकसित भारत-2047 के लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त किया जा सकेगा।

मुख्यमंत्री ने गुजराती समुदायों के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करते हुए कहा कि मातृभूमि राज्य से हजारों किलोमीटर दूर रहने के बावजूद सैन फ्रांसिस्को के गुजराती परिवारों ने गुजराती भाषा, त्योहारों, उत्सवों और मूल्यों को जीवंत रखा है, जो सभी गुजरातियों के गौरव को उजागर करता है।

उन्होंने इन्वेस्टमेंट, को-ऑपरेशन, नॉलेज एंड ऑपॉर्च्युनिटी के लिए गुजराती समुदायों के साथ मिलकर इनोवेशन इकोसिस्टम के माध्यम से शक्तिशाली-समृद्ध गुजरात के निर्माण की अपेक्षा व्यक्त की।

इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री एम.के. दास और गुजरात प्रतिनिधिमंडल में शामिल वरिष्ठ सचिव तथा प्रतिनिधि व बड़ी संख्या में गुजराती डायस्पोरा उपस्थित रहे।

स्मार्ट पुलिसिंग की दिशा में गुजरात का महत्वपूर्ण कदम

गुजरात पुलिस एआई-आधारित वीडियो एनालिटिक्स और सीसीटीवी इंटीग्रेटेशन के लिए आयोजित करेगी देश का सबसे बड़ा हैकाथॉन

देश में पहली बार प्रतिभागी लाइव सीसीटीवी कैमरा फीड्स पर वास्तविक पब्लिक सेफ्टी सॉल्यूशन तैयार करेंगे

गांधीनगर : गुजरात पुलिस राज्य की सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक कुशल, सटीक और स्मार्ट बनाने के उद्देश्य से 'गुजरात पुलिस इनोवेशन चैलेंज 2026' के अंतर्गत देश का सबसे बड़ा सीसीटीवी इंटीग्रेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)-आधारित हैकाथॉन का आयोजन करने जा रही है।

इस पहल के जरिए देशभर के इनोवेटर्स, स्टार्टअप्स, टेक्नोलॉजी कंपनियों, डेवलपर्स और शोधकर्ताओं को एक मंच पर लाया जाएगा, ताकि स्मार्ट और प्रो-एक्टिव पुलिसिंग की वास्तविक चुनौतियों का समाधान निकाला जा सके। राज्य के पुलिस महानिदेशक श्री जीएस मलिक के मार्गदर्शन में इस पहल के माध्यम से वास्तविक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एआई-आधारित सॉल्यूशन विकसित किए जाएंगे।

इस हैकाथॉन का मुख्य लक्ष्य स्केलेबल सॉल्यूशन के साथ एक ऐसा मजबूत, तेज और कुशल पब्लिक सेफ्टी इकोसिस्टम तैयार करना है, जो राज्य के 80,000 से अधिक कैमरों के साथ

इंटीग्रेट हो सके। साथ ही, इस हैकाथॉन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न सरकारी विभागों में अलग-अलग वेंडर्स, टेक्नोलॉजी, वीएमएस प्लेटफॉर्म और नेटवर्क आर्किटेक्चर पर चलने वाले सीसीटीवी कैमरों को इंटीग्रेट करके सुरक्षित, तेज और कुशल पब्लिक इकोसिस्टम बनाना है।

यह सीसीटीवी इंटीग्रेशन और एआई-आधारित वीडियो एनालिटिक्स के क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा हैकाथॉन है, जिसमें विजेता प्रतिभाशाली टीमों को कुल 37 लाख रुपए के नकद पुरस्कार दिए जाएंगे। हैकाथॉन प्रतियोगिता की सबसे अहम बात यह है कि देश में पहली बार प्रतिभागी लाइव सीसीटीवी कैमरा फीड्स पर वास्तविक परिस्थिति के अनुसार काम करेंगे। इसके अलावा, संदिग्ध व्यक्तियों, वाहनों और असामान्य गतिविधियों की रियल-टाइम पहचान और तत्काल अलर्ट सिस्टम, ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन, व्हीकल ट्रैकिंग, वॉचलिस्ट मैचिंग और क्रॉस-कैमरा सर्च जैसी क्षमताओं का भी वास्तविक परीक्षण किया जाएगा।

इस प्रतिस्पर्धा का आयोजन दो चरणों में किया गया है। जिसमें स्टेज 1-ओपन इनोवेशन चैलेंज के अंतर्गत प्रतिभागियों का चयन दो श्रेणियों में किया जाएगा। श्रेणी-1 में विद्यार्थियों और छोटे एवं मध्यम स्टार्टअप्स, जबकि श्रेणी-2 में बड़े स्टार्टअप्स और स्थापित टेक्नोलॉजी कंपनियां हिस्सा लेंगी।

स्टेज-2 यानी फिनाले में स्टेज-1 में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शीर्ष 6 टीमें हिस्सा लेंगी, जो लाइव प्रोडक्शन एनवायरनमेंट में वास्तविक पुलिसिंग सिनारियो के साथ डेमोंस्ट्रेशन देंगी।

प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लेने और उसके नियमों, पात्रता और गाइडलाइंस की विस्तृत जानकारी आधिकारिक पोर्टल https://sentinel.gujarat.gov.in पर दी गई है। यह हैकाथॉन सितंबर महीने में शुरू होने की संभावना है।

इस हैकाथॉन को आई-हब (गुजरात) की तकनीकी साझेदारी तथा देश के प्रतिष्ठित संस्थानों डीए-आईआईसीटी और राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय (एनएफएसयू) के नॉलेज पार्टनरशिप सहयोग से आयोजित किया जा रहा है।

स्कूलों में अध्यनरत 10 लाख से अधिक बेटियों को मिलेगा नि:शुल्क सैनिटरी नैपकिन : गुजरात सरकार ने 46 करोड़ रुपए से अधिक का बजट मंजूर किया

सरकारी स्कूल की बेटियों को प्रतिमाह 30 रुपए के हिसाब से निःशुल्क ऑक्सो-बायोडिग्रेडेबल सैनिटरी नैपकिन दिए जाएँगे

गांधीनगर : राज्य की सरकारी स्कूलों में बेटियों की उपस्थिति बढ़ाने और मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता बनाए रखने के उद्देश्य से शिक्षा विभाग द्वारा विशेष पहल की गई है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन तथा शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युम्न वाजा एवं शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रीवाबा जाडेजा के नेतृत्व में राज्य के सरकारी उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की कक्षा-6 से 12 तक की कुल 10 लाख से अधिक बेटियों के लिए 46.68 करोड़ रुपए के खर्च से 'निःशुल्क सैनिटरी नैपकिन वितरण' की सुविधा सुनिश्चित की गई है। इस पहल के तहत सरकारी स्कूलों की प्रत्येक बेटी के लिए वार्षिक 360 रुपए के बजट प्रावधान के साथ हर महीने गुणवत्तापूर्ण ऑक्सो-बायोडिग्रेडेबल सैनिटरी नैपकिन निःशुल्क दिए जाएँगे। स्कूलों में सरल वितरण और सुचारु व्यवस्था के लिए शिक्षा जिसमें छात्राओं को स्कूलों में ही उच्च गुणवत्ता वाले 'ऑक्सो-बायोडिग्रेडेबल सैनिटरी नैपकिन' उपलब्ध कराए जाएँगे। बेटियाँ किसी भी प्रकार का संकोच, शर्म या झिझक महसूस किए बिना आरामदायक वातावरण में नैपकिन प्राप्त कर सकें, ऐसी सुविधायुक्त

व्यवस्था स्कूल में की जाएगी।

'निःशुल्क सैनिटरी नैपकिन' के प्रत्यक्ष क्रियान्वयन और वितरण की निगरानी के लिए स्कूल की ही महिला शिक्षिका को 'नोडल शिक्षिका' के रूप में मुख्य जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, ताकि बेटियाँ उनके साथ स्वतंत्र रूप से चर्चा कर सकें। इसके अलावा; महिला शिक्षिका द्वारा कन्याओं को शारीरिक स्वच्छता और मासिक धर्म के संबंध में सही तथा वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी, ताकि उनके मन से भय और भ्राँतियाँ दूर हों तथा शिक्षा के प्रति आत्मविश्वास बढ़े।

इसके अलावा; उपयोग किए गए नैपकिन का निपटान पूरी तरह से 'सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स, 2016' के अनुसार करना होगा। पैड्स को कागज में लपेटकर गीले-सूखे कचरे से अलग रखना, खुले में या शौचालय में फेंकना नहीं है; इसके बजाय स्थानीय कचरा संग्रहण व्यवस्था को सौंपना होगा। इसके अतिरिक्त; स्कूलों में उपलब्ध इंसिनरेटर (सैनिटरी पैड जलाने की भट्ठी) मशीन कार्यरत रहे और उसकी समय-समय पर उचित सर्विस हो; यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा विभाग द्वारा कहा गया है।

गुजरात सरकार का यह निर्णय केवल स्वास्थ्य संबंधी नहीं है, बल्कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'नारी सशक्तीकरण' के संकल्प को साकार करने वाला क्रांतिकारी कदम है। विशेषकर ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में मासिक धर्म के दिनों में अनुपस्थित रहने वाली कन्याएँ अब नियमित रूप से स्कूल आ सकेंगी, जिससे बेटियों के स्थायीकरण के लिए राज्य सरकार को मदद मिलेगी।

इसके अलावा; अस्वच्छ कपड़े के उपयोग से होने वाले गंभीर संक्रमण और प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से कन्याओं को सुरक्षा मिलेगी। इस पहल के तहत दिए जाने वाले पर्यावरण-अनुकूल ऑक्सो-बायोडिग्रेडेबल नैपकिन पर्यावरण का भी संरक्षण करेंगे, जबकि दूसरी ओर निःशुल्क वितरण के कारण गरीब व मध्यम वर्गीय परिवारों पर पड़ने वाला आर्थिक बोझ कम होगा।

राज्य सरकार ने पंचायत पटवारी और राजस्व पटवारी के बीच कार्यों का स्पष्ट बंटवारा करते हुए जॉब चार्ट घोषित किया : पंचायत मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल

गांधीनगर : गुजरात सरकार ने ग्रामीण स्तर पर प्रशासनिक सरलता, सुगमता और नागरिकों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। पंचायत मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल ने सोमवार को गांधीनगर में इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए कहा कि गुजरात सरकार ने राजस्व पटवारी और पंचायत पटवारी-सह-मंत्री के कार्यों एवं जिम्मेदारियों को लेकर लंबे समय से चल रहे विचार-विमर्श के बाद एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। जिसमें राज्य सरकार ने पंचायत पटवारी और राजस्व पटवारी के बीच कार्यों का स्पष्ट विभाजन किया है और जॉब चार्ट घोषित किया है। ग्रामीण स्तर पर छोटे-बड़े करीब 90 से 100 कार्यों और यदि विषय के अनुसार इन्हें अलग करें, तो जनता से जुड़े कुल 290 कार्यों का समावेश होता है। पंचायत मंत्री ने आगे कहा कि राज्य सरकार के इस महत्वपूर्ण निर्णय से ग्रामीण स्तर पर राजस्व पटवारी और पंचायत पटवारी-सह-मंत्री के बीच कार्यों और जिम्मेदारियों को लेकर और अधिक स्पष्टता आएगी।

पंचायत पटवारी-सह-मंत्री के कार्यक्षेत्र में ग्राम पंचायत और ग्राम विकास के कार्य

पंचायत, ग्राम गृह निर्माण और ग्राम विकास विभाग द्वारा निर्धारित जॉब चार्ट के अनुसार पंचायत पटवारी-सह-मंत्री को पंचायत अधिनियम और नियमों के तहत ग्राम पंचायत सचिव के रूप में किए जाने वाले सभी कार्य करने होंगे।

इसके अलावा, पंचायत पटवारी के लिए केंद्र और राज्य सरकार की व्यक्तिगत और विकासोन्मुखी योजनाओं के ग्रामीण स्तर पर क्रियान्वयन का काम, विभिन्न प्रमाणपत्रों से संबद्ध कार्य, ग्रामीण स्तर पर ग्रामतळ (गांव की आबादी भूमि), गौचर (चरागाह) तथा पंचायत के अधीन भूमि पर अतिक्रमण से जुड़े कार्य,

सार्वजनिक संपत्तियों से संबंधित कार्य, गांव में स्वच्छता, जलापूर्ति, वृक्षारोपण, ग्राम सभा तथा विभिन्न समितियों के कामकाज जैसी जिम्मेदारियां जॉब चार्ट में निर्धारित की गई हैं।

जॉब चार्ट में पीएम-किसान, पीएम-विश्वकर्मा, ई-ग्राम/ई-निर्माण कार्ड, आंगनबाड़ी, प्राथमिक शिक्षा, ग्रामीण स्वच्छता, जलापूर्ति, ग्रामतळ के भूखंड, सार्वजनिक उद्देश्य की जमीन, स्वच्छता और स्वास्थ्य जैसे ग्रामीण स्तर के कार्यों का भी समावेश किया गया है।

राजस्व पटवारी के कार्यक्षेत्र में राजस्व और भूमि संबंधित कार्य

राजस्व विभाग द्वारा निर्धारित किए गए जॉब चार्ट के अनुसार राजस्व पटवारी के कार्यों में राजस्व विभाग के विभिन्न अधिनियमों एवं नियमों, विस्थापित संपत्ति तथा अशांत धारा के अंतर्गत आने वाले सभी कार्य, केंद्र और राज्य सरकार की भूमि के संदर्भ में भूमि रिकॉर्ड और भू-सर्वेक्षण से संबंधित कार्य तथा पीएम-स्वामित्व योजना से संबंधित कार्यों का समावेश किया गया है।

इसके अलावा, राजस्व पटवारी को भूमि राजस्व की वसूली, बकाया राशि की वसूली, भूमि संबंधित रिकॉर्ड और अधिकारों के कार्य, सरकारी संपत्ति तथा भूमि से संबंधित अधिकारों की जांच, अतिक्रमण से जुड़े कार्य, भूमि अधिग्रहण, भू-राजस्व छूट-यदि कमी या बढ़ोतरी हो, भूमि राजस्व का प्रशासनिक कार्य, फसल उत्पादन और भूमि सुधार से संबंधित कार्य करने होंगे।

राजस्व पटवारी के जॉब चार्ट में फसल कटाई के प्रयोग, किसानों का पंजीकरण, फसल बीमा से संबंधित कार्य, प्राकृतिक आपदा के समय कृषि राहत पैकेज, आवंटित भूमि से जुड़े कार्य, अतिक्रमण की पहचान तथा राजस्व अधिकारी द्वारा सौंपे जाने वाले अन्य कार्यों का भी समावेश किया गया है।

आवश्यकता के अनुसार दोनों कैडरों के बीच तालमेल बना रहेगा

दोनों जॉब चार्ट में कार्यों की स्पष्टता के साथ ही जहां आवश्यक है, वहां आपसी सहयोग और तालमेल का प्रावधान भी किया गया है। विशेषकर, प्राकृतिक आपदाओं के समय कृषि राहत पैकेज से जुड़े कार्यों में पंचायत पटवारी-सह-मंत्री और राजस्व पटवारी द्वारा आपसी समवन्य के साथ काम करने का प्रावधान किया गया है।

जॉब चार्ट में यह भी प्रावधान किया गया है कि विशेष मामलों में विकास आयुक्त के विशेष आदेश पर ग्रामीण स्तर के कार्यों में ग्राम कंप्यूटर उद्यमी (वीसीई) राजस्व पटवारी की सहायता कर सकते हैं।

राज्य सरकार के इस निर्णय से दोनों कैडरों के मूल कार्य, कार्यक्षेत्र और जिम्मेदारियों को लेकर अधिक स्पष्टता आएगी। इससे, ग्रामीण स्तर पर पंचायत से संबंधित तथा राजस्व कार्यों का प्रबंधन और सुव्यवस्थित तरीके से हो पाएगा। साथ ही, इससे एक ऐसी व्यवस्था बनेगी जिसमें संबंधित कार्यों को निर्धारित जिम्मेदारियों के अनुसार करने में आसानी रहेगी।

लंबे समय से चले आ रहे प्रयासों के बाद लिया गया यह निर्णय ग्रामीण प्रशासन को अधिक सुव्यवस्थित बनाने तथा राजस्व एवं पंचायत से संबंधित कार्यों में जिम्मेदारियों की स्पष्टता लाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के करकमलों से भरूच जिले को मिली 482 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं की भेंट : सुरक्षा, सुविधा और विकास का सूर्योदय

अंकलेश्वर जीआईडीसी में 'प्रोजेक्ट अस्मिता' अंतर्गत उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की अध्यक्षता में 13 कंपनियों के सहयोग से लगभग 526 बेटियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए

गांधीनगर : भरूच जिले में महिला सशक्तिकरण, रोजगार, औद्योगिक संरक्षण और विकास को अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अंकलेश्वर जीआईडीसी में राज्य के उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के करकमलों से जिले को 482 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं की भेंट दी गई है।

महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए भरूच पुलिस की सराहनीय पहल 'प्रोजेक्ट अस्मिता' के अंतर्गत भरूच जिले की 13 कंपनियों के सहयोग से लगभग 526 बेटियों को विभिन्न कंपनियों में नौकरी के नियुक्ति पत्र उप मुख्यमंत्री तथा जलापूर्ति एवं जल संसाधन राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल के करकमलों से प्रदान किए गए।

दहेज पुलिस थाना क्षेत्र में जीएफएल कंपनी में हुई 3.16 करोड़ रुपए से अधिक की सेंधमार चोरी की गुत्थी चंद घंटों में सुलझा ली गई थी। इस अवसर पर 'तेरा तुझको अर्पण' कार्यक्रम अंतर्गत इस मामले में रिकवर किया गया सारा माल-सामान मूल मालिक को चेक के रूप में वापस सौंपा गया। इसके अलावा; 'तेरा तुझको अर्पण' कार्यक्रम के तहत भरूच पुलिस विभाग को उसके सराहनीय कार्य के लिए प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि हमारी प्रशासन व्यवस्था भी रीति-रिवाज, संस्कार और विकास के कार्यों; इन सभी विषयों को साथ लेकर आगे बढ़ने वाली व्यवस्था है, जो वास्तव में प्रशंसनीय है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में भरूच जिले में तेजी से विकास कार्य हो रहे हैं। छोटी से छोटी समस्याओं और प्रशासनिक कार्यप्रणाली की चुनौतियों के बीच भी सरकार तथा पुलिस प्रशासन नागरिकों की सुविधा एवं सुरक्षा के लिए कंधे से कंधा मिलाकर समाधान लाने के लिए कटिबद्ध हैं। शहर की यातायात व्यवस्था सुचारु बनाना, त्योहारों के दौरान शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखना तथा असामाजिक तत्वों के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई करके पुलिस जनता की सच्ची मित्र के रूप में अपनी भूमिका सार्थक कर रही है।

श्री संघवी ने कहा कि इसके अलावा; अवैध ब्याजखोरों के दूषण से सामान्य नागरिकों को मुक्ति दिलाना, जटिल कानूनी प्रक्रिया के बिना ही राशि वापस दिलाना और चोरी हुए सामान की त्वरित रिकवरी करके मालिकों को वापस सौंपने जैसे जनाभिमुख कार्य पुलिस कर रही है। उन्होंने कहा कि भरूच जिले में पुलिस प्रशासन द्वारा विशेष भर्ती कैम्प आयोजित कर स्थानीय महिलाओं को विभिन्न उद्योगों में सीधी नौकरी दिलाने की सराहनीय पहल की गई है। इस अभियान अंतर्गत जिले की 500 से अधिक महिलाओं को रोजगार प्रदान किया गया है। सामान्य शिक्षा प्राप्त अथवा उच्च शिक्षित महिलाओं को 17,000 रुपए से अधिक का प्रारंभिक वेतन मिलने से अनेक परिवारों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में व्यापक सुधार आया है। भरूच पुलिस केवल सुरक्षा ही नहीं, बल्कि जनता के आर्थिक और सामाजिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण भागीदार बन रही है।

उप मुख्यमंत्री ने लोकार्पण तथा शिलान्यास की चर्चा करते हुए कहा कि भरूच जिले और विशेष रूप से अंकलेश्वर तथा आसपास की औद्योगिक बस्तियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कुल 482 करोड़ रुपए के प्रोजेक्टों का लोकार्पण तथा शिलान्यास किया गया है। अंकलेश्वर में ट्रांसपोर्ट नगर बनकर तैयार है, जहाँ 510 से अधिक ट्रकों की पार्किंग हो सकेगी और जिससे ट्रैफिक का बोझ कम होगा। 3,000 वर्ग मीटर का वेयरहाउस तथा लगभग 144 नए औद्योगिक शेड बनाए गए हैं, जिससे एमएसएमई उद्योगों को बड़ा लाभ होगा। जिले के जंबूसर स्थित बल्क ड्रग पार्क में 40 एमएलडी क्षमता वाली जलापूर्ति योजना पूरी हुई है। औद्योगिक बस्तियों में सुरक्षा के लिए लगभग 1,895 स्ट्रीट लाइटें लगाई गई हैं।

उन्होंने कहा कि विकसित भारत-2047 और भविष्य के आयोजन पर बल देते हुए भरूच और गुजरात देश के उत्पादन क्षेत्र का मुख्य केन्द्र हैं। 'जीरो डिफेक्ट' के साथ वैश्विक स्तर का उत्पादन करने पर बल देते हुए मैन्युफैक्चरिंग के लिए भारत के दूरदर्शी प्रधानमंत्री को याद किया था। भरूच गुजरात का हार्ट है। हाईस्पीड रेल, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर और बंदरगाहों के विकास से कनेक्टिविटी मजबूत हुई है। गुजरात ग्रीन हाइड्रोजन तथा रिन्यूएबल एनर्जी क्षेत्र में देश में अग्रणी है। इनोवेशन तथा नई औद्योगिक नीति के तहत अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) तथा पेटेंट प्राप्त करने के लिए बड़े प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। उन्होंने उद्योगपतियों से इसका लाभ प्राप्त करने का अनुरोध किया। अंत में उन्होंने कहा कि आने वाला समय भारत का है और भारत के इस समय में गुजरात अधिक से अधिक साथ साथ मिलकर इस यात्रा को तेजी से आगे बढ़ाए; इसके लिए हमारा प्रशासन टीम के रूप में कार्य कर रहा है। उन्होंने शुभकामनाएँ दीं कि आप सभी अपने सपनों को साकार करें और उद्योग क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करें।

जलापूर्ति एवं जल संसाधन राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल ने कार्यक्रम के अनुरूप प्रासंगिक उद्बोधन किया। जिला कलेक्टर श्री नवनाथ गव्हाणे ने भी प्रासंगिक संबोधन किया।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्री डिम्पलबेन राज, सांसद श्री मनसुखभाई वसावा, विधायक सर्वश्री अरुणसिंह रणा, डी. के. स्वामीजी, रितेशभाई वसावा, जीआईडीसी की वाइस चेयरमैन एवं सीईओ सुश्री प्रवीणा डी. के., जॉइंट एमडी श्री प्रभव जोशी, जिला पुलिस अधीक्षक श्री अक्षयराज मकवाणा, जिला विकास अधिकारी श्री योगेश कपासे तथा उद्योगपति और बहनें उपस्थित रहे।

राणीप में युवक की निर्मम हत्या से सनसनी, छत्राल के गोदाम में छिपे मिले आरोपी

अहमदाबाद। राणीप इलाके में एक युवक की सार्वजनिक रूप से धारदार हथियारों से हमला कर हत्या किए जाने की घटना ने पूरे क्षेत्र में सनसनी फैला दी है। दिनदहाड़े हुई इस वारदात में हमलावरों ने युवक को घेरकर उस पर तलवार और धारिया जैसे हथियारों से ताबड़तोड़ हमला किया। हमले में युवक के शरीर पर 15 से अधिक गहरे घाव बताए जा रहे हैं। गंभीर रूप से घायल युवक ने बाद में दम तोड़ दिया। घटना के बाद सामने आए सीसीटीवी फुटेज ने वारदात की भयावहता को उजागर कर दिया है। फुटेज में एक टेम्पो से करीब 10 लोगों के उतरने और हथियार लेकर युवक के पीछे दौड़ने का दृश्य दिखाई दे रहा है।

पुलिस के अनुसार, हत्या की यह वारदात राणीप पुलिस चौकी के नजदीक सार्वजनिक स्थान पर हुई। जिस जगह घटना हुई, वहां अचानक बड़ी संख्या में हथियारबंद लोगों के पहुंचने से आसपास मौजूद लोगों में अफरा-तफरी मच गई। बताया जा रहा है कि हमलावरों ने युवक को घेर लिया और उसे भागने का मौका नहीं दिया। इसके बाद आरोपियों ने धारदार हथियारों से उस पर लगातार वार किए। हमले की तीव्रता इतनी अधिक थी कि युवक के शरीर पर कई गहरे घाव हो गए। स्थानीय लोगों और प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हमले के बाद मौके पर दहशत का माहौल बन गया था।

वारदात के बाद पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू की। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई। इसी दौरान पुलिस के हाथ ऐसा महत्वपूर्ण फुटेज लगा, जिसमें हमले से पहले की गतिविधियां दिखाई दे रही थीं। फुटेज में एक टेम्पो सड़क पर आता हुआ दिखाई देता है। टेम्पो रुकने के बाद उसमें से करीब 10 लोग बाहर निकलते नजर आते हैं। उनके हाथों में तलवार और धारिया जैसे हथियार दिखाई दे रहे हैं। इसके बाद सभी लोग एक युवक के पीछे दौड़ते हुए दिखाई देते हैं।

सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद पुलिस ने आरोपियों की पहचान और उनके संभावित ठिकानों की तलाश तेज कर दी। जांच टीम ने घटनास्थल के आसपास के कैमरों के अलावा उन रास्तों की भी जानकारी जुटाई, जिनसे आरोपी वारदात के बाद फरार हुए थे। पुलिस ने तकनीकी जांच और अन्य उपलब्ध सुरागों के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू की। जांच के दौरान पुलिस को जानकारी मिली कि वारदात में शामिल आरोपी छत्राल इलाके में छिपे हुए हैं।

सूचना मिलने के बाद पुलिस टीम ने छत्राल में कार्रवाई की और वहां एक गोदाम को घेर लिया। तलाशी के दौरान पुलिस ने आरोपियों को गोदाम से पकड़ लिया। आरोपियों के पकड़े जाने के बाद पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि हत्या की साजिश कब और कहां रची गई थी तथा वारदात के पीछे वास्तविक कारण क्या था। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि हमले में शामिल सभी लोग एक-दूसरे को पहले से जानते थे या किसी योजना के तहत उन्हें एकत्र किया गया था।

इस मामले में सामने आया सीसीटीवी फुटेज पुलिस जांच के लिए अहम कड़ी माना जा रहा है। फुटेज में जिस तरह बड़ी संख्या में लोग एक साथ टेम्पो से उतरकर हथियारों के साथ युवक का पीछा करते दिखाई दे रहे हैं, उससे पुलिस को आशंका है कि वारदात अचानक हुए विवाद का परिणाम नहीं, बल्कि पूर्व नियोजित हमला हो सकती है। हालांकि, हत्या के पीछे की वजह को लेकर पुलिस की जांच अभी जारी है और आधिकारिक रूप से अंतिम कारण सामने नहीं आया है।

घटना के बाद राणीप क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर भी सवाल उठे हैं। जिस स्थान पर युवक की हत्या की गई, वह पुलिस चौकी के नजदीक बताया जा रहा है। ऐसे में सार्वजनिक स्थान पर हथियारों से लैस लोगों द्वारा युवक पर हमला किए जाने की घटना ने स्थानीय लोगों को चिंतित कर दिया है। लोगों का कहना है कि यदि इतनी बड़ी संख्या में हमलावर हथियारों के साथ किसी युवक का पीछा कर रहे थे, तो यह कानून-व्यवस्था के लिहाज से गंभीर मामला है।

पुलिस ने घटनास्थल से मिले साक्ष्यों को भी जांच में शामिल किया है। अधिकारियों की टीम यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि हमलावर किस रास्ते से घटनास्थल तक पहुंचे और वारदात के बाद किस दिशा में गए। टेम्पो की भी जांच की जा रही है, क्योंकि सीसीटीवी फुटेज में वही वाहन हमलावरों के घटनास्थल तक पहुंचने का प्रमुख माध्यम दिखाई दे रहा है। वाहन के मालिक और उससे जुड़े लोगों की जानकारी भी जांच का हिस्सा हो सकती है।

हमले में मारे गए युवक के परिवार में घटना के बाद मातम पसरा हुआ है। अचानक हुई इस हत्या ने परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है। परिजन आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि जिस तरह युवक पर हमला किया गया, उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और हत्या में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका सामने आनी चाहिए।

पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लेने के बाद उनसे पूछताछ शुरू कर दी है। पूछताछ में हत्या की वजह, हमले की योजना, हथियारों की व्यवस्था और वारदात में शामिल अन्य लोगों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।

चांदलोडिया A और B रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का 70% कार्य पूर्ण,यात्रियों के फीडबैक पर सुविधाओं का विस्तार जारी

भारतीय रेल द्वारा अमृत भारत स्टेशन योजना के माध्यम से देशभर के 1300 से अधिक रेलवे स्टेशनों को आधुनिक, सुरक्षित, सुगम एवं यात्री-केंद्रित स्वरूप प्रदान करने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में अहमदाबाद मंडल के चांदलोडिया रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास कार्य अनुमानित लागत 45.72 करोड़ से किया जा रहा है। इस परियोजना के माध्यम से स्टेशन पर आधुनिक यात्री सुविधाओं, बेहतर आवागमन व्यवस्था, उन्नत प्लेटफॉर्म सुविधाओं, नए स्टेशन भवन, फुट ओवर ब्रिज तथा पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग एरिया जैसी सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। इस परियोजना लगभग 70 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है जबकि बाकी कार्य 31 मार्च 2027 तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा है।

कोच की जानकारी एवं यात्री मार्गदर्शन व्यवस्था

यात्रियों से प्राप्त सुझावों एवं फीडबैक को प्राथमिकता देते हुए पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा चांदलोड़िया स्टेशन पर यात्री सूचना प्रणाली, कोच मार्गदर्शन तथा स्टेशन की पहचान से संबंधित सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ किया जा रहा है। यात्रियों द्वारा चांदलोड़िया बी से सोमनाथ की यात्रा के दौरान कोच की स्थिति पहचानने में होने वाली कठिनाई के संबंध में दिए गए फीडबैक का संज्ञान लेते हुए मंडल द्वारा यात्री सूचना व्यवस्था की समीक्षा की गई है।

वर्तमान में स्टेशन के प्रवेश द्वार के समीप प्रतीक्षालय में इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन इंडिकेटर डिस्प्ले बोर्ड उपलब्ध है, जिस पर ट्रेन संख्या सहित कोच की स्थिति से संबंधित जानकारी प्रदर्शित की जाती है। यात्रियों की सहायता के लिए सहयोग काउंटर पर आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाता है तथा पब्लिक एड्रेस (PA) सिस्टम के माध्यम से महत्वपूर्ण एवं नियमित ट्रेन संबंधी घोषणाएं भी की जाती हैं।

यात्रियों, विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों की सुविधा को और बेहतर बनाने के लिए चांदलोड़िया स्टेशन के प्लेटफॉर्मों पर कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड (CGDB) उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। चांदलोड़िया ए एवं बी दोनों स्टेशनों के प्लेटफॉर्मों पर CGDB को शेड पर स्थापित किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त, चांदलोड़िया ए स्टेशन के मुख्य भवन में मल्टीलाइन डिस्प्ले बोर्ड स्थापित कर दिया गया है और यह कार्यशील है, जबकि चांदलोड़िया बी स्टेशन के मुख्य भवन में मल्टीलिंगुअल डिस्प्ले बोर्ड का कार्य लगभग 10 दिनों में पूरा किया जाएगा। इससे यात्रियों को ट्रेनों से संबंधित जानकारी अधिक स्पष्ट एवं सुविधाजनक रूप से उपलब्ध होगी।

आधुनिक स्टेशन भवन एवं यात्री सुविधाओं का विकास

चांदलोडिया रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के अंतर्गत मुख्य स्टेशन भवन का निर्माण 100 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। लगभग 11,100 वर्गफीट क्षेत्रफल वाले स्टेशन भवन में बुकिंग काउंटर, वीआईपी प्रतीक्षालय, प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालय, सामान्य प्रतीक्षालय, एसी एवं नॉन-एसी प्रतीक्षालय, बेबी फीडिंग रूम तथा विभिन्न आवश्यक परिचालन एवं वाणिज्यिक सुविधाओं का प्रावधान किया गया है। स्टेशन के विभिन्न भवनों में यात्रियों एवं रेल कर्मचारियों के लिए आधुनिक शौचालय तथा अन्य आवश्यक सुविधाएं भी विकसित की गई हैं।

चांदलोडिया-ब स्टेशन की सुविधाओं में पीआरएस, एसी एवं नॉन-एसी प्रतीक्षालय के साथ बेबी फीडिंग रूम, पुरुष एवं महिला शौचालय तथा दिव्यांगजन के लिए शौचालय की सुविधा शामिल है। इसके अतिरिक्त पार्सल कार्यालय भवन तथा अन्य आवश्यक परिचालन सुविधाओं का भी विकास किया गया है।

विशाल फुट ओवर ब्रिज एवं एयर कॉन्कोर्स

यात्रियों की सुगम एवं सुरक्षित आवाजाही के लिए 40 फीट चौड़े फुट ओवर ब्रिज का निर्माण किया जा रहा है, जो प्लेटफॉर्म संख्या 1 से 5 तक कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। फुट ओवर ब्रिज/एयर कॉन्कोर्स का कार्य लगभग 88 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। इस परियोजना के अंतर्गत 20 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज का भी प्रावधान किया गया है।

प्लेटफॉर्म सुविधाओं का व्यापक उन्नयन

चांदलोडिया रेलवे स्टेशन पर लगभग 31,9000 वर्गफीट क्षेत्र में प्लेटफॉर्म संबंधी विकास कार्य किए जा रहे हैं, जिनकी प्रगति लगभग 82 प्रतिशत है। प्लेटफॉर्म संख्या 1 पर रिसर्फेसिंग का कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि प्लेटफॉर्म संख्या 2, 4 एवं 5 पर रिसर्फेसिंग तथा प्लेटफॉर्म संख्या 3 पर रेल लेवल प्लेटफॉर्म को ऊंचा करने का कार्य प्रगति पर है। इन कार्यों से यात्रियों के लिए प्लेटफॉर्म अधिक सुरक्षित, सुविधाजनक एवं व्यवस्थित होंगे।

कवर ओवर प्लेटफॉर्म एवं मौसम से सुरक्षा

यात्रियों को धूप एवं वर्षा सहित प्रतिकूल मौसम से सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्लेटफॉर्म संख्या 1 से 5 तक कुल लगभग 2,15000 वर्गफीट क्षेत्र में कवर ओवर प्लेटफॉर्म (COP) का प्रावधान किया गया है। वर्तमान में प्लेटफॉर्म संख्या 1 पर लगभग 22000 वर्गफीट क्षेत्र में COP का कार्य प्रगति पर है तथा शेष प्लेटफॉर्मों पर कार्य चरणबद्ध रूप से किया जाना है।

बेहतर पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग एरिया

स्टेशन परिसर में यात्रियों एवं वाहनों की आवाजाही को अधिक सुगम एवं व्यवस्थित बनाने के लिए लगभग 78300 वर्गफीट क्षेत्र में सर्कुलेटिंग एवं पार्किंग एरिया का विकास किया जा रहा है, जिसकी प्रगति लगभग 97 प्रतिशत है। चांदलोडिया-ए स्टेशन पर लगभग 35,000 वर्गफीट तथा चांदलोडिया-बी स्टेशन पर लगभग 43,400 वर्गफीट क्षेत्र में सर्कुलेटिंग एवं पार्किंग सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। परियोजना में दिव्यांगजन के लिए विशेष पार्किंग सुविधा भी विकसित की गई है।

यात्रियों के लिए होल्डिंग एरिया एवं प्रतीक्षालय

यात्रियों की सुविधा एवं भीड़ प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए लगभग 82000 वर्गफीट क्षेत्र में होल्डिंग एरिया विकसित किया जा रहा है, जिसकी प्रगति 98 प्रतिशत है। स्टेशन भवन एवं सर्कुलेटिंग एरिया में यात्रियों के लिए प्रतीक्षा एवं होल्डिंग क्षेत्र की योजना बनाई गई है। प्रतीक्षालय एवं आंतरिक सुविधाओं के उन्नयन का कार्य लगभग 92 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। इसके अंतर्गत प्रथम श्रेणी, सामान्य, एसी एवं नॉन-एसी प्रतीक्षालय तथा बेबी फीडिंग रूम जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

लिफ्ट एवं समावेशी यात्री सुविधाएं

दिव्यांगजन, वरिष्ठ नागरिकों तथा अन्य यात्रियों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए कुल 5 लिफ्ट का प्रावधान किया गया है। लिफ्ट कार्य की प्रगति लगभग 62 प्रतिशत है तथा प्रत्येक प्लेटफॉर्म पर लिफ्ट सुविधा विकसित की जा रही है। इसके साथ ही दिव्यांगजन के लिए पृथक शौचालय एवं पार्किंग जैसी सुविधाओं का भी प्रावधान किया गया है।

शौचालय एवं स्वच्छता सुविधाओं का उन्नयन

स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा एवं स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए लगभग 1200 वर्गफीट क्षेत्र में शौचालयों के उन्नयन एवं अतिरिक्त शौचालयों का विकास किया जा रहा है, जिसकी प्रगति लगभग 82 प्रतिशत है। इसमें पुरुष एवं महिला शौचालयों के साथ पे-एंड-यूज तथा दिव्यांगजन शौचालयों सहित विभिन्न आवश्यक सुविधाएं शामिल हैं।

चांदलोडिया रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की यह परियोजना स्टेशन को आधुनिक एवं यात्री-केंद्रित परिवहन केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। नए स्टेशन भवन, उन्नत प्लेटफॉर्म, विशाल फुट ओवर ब्रिज, होल्डिंग एरिया, पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग एरिया, लिफ्ट, प्रतीक्षालय तथा दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाओं के विकास से यात्रियों को अधिक सुरक्षित, सुगम एवं आरामदायक यात्रा अनुभव प्राप्त होगा। परियोजना के पूर्ण होने के बाद चांदलोडिया रेलवे स्टेशन क्षेत्र की बढ़ती यात्री आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने में सक्षम होगा।

वेरावल-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस के परिवर्तित मार्ग का शुभारंभ

ढसा एवं चीतल रेलवे स्टेशनों से जनप्रतिनिधियों ने हरी झंडी दिखाकर किया शुभारंभ; नए मार्ग से यात्रियों को मिलेगी तेज एवं सुविधाजनक रेल कनेक्टिविटी

रेलवे बोर्ड की मंजूरी के अनुसार ट्रेन संख्या 26902/26901 वेरावल-साबरमती-वेरावल वंदे भारत एक्सप्रेस के परिवर्तित मार्ग का शुभारंभ समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ढसा रेलवे स्टेशन से श्रीमती निमुबेन जयंतिभाई बांभणीया, माननीय राज्य मंत्री, उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार एवं माननीय सांसद, भावनगर (लोक सभा), तथा श्री शंभुप्रसादजी बलदेवदास टुंडीया, माननीय विधायक, गढ़डा की गरिमामयी उपस्थिति में हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना किया गया।

इसी क्रम में चीतल रेलवे स्टेशन से श्री कौशिकभाई वेकरीया, माननीय विधायक, अमरेली तथा कानून, न्यायपालिका, ऊर्जा, पेट्रोकेमिकल्स, विधायी एवं संसदीय कार्य मंत्री, गुजरात सरकार एवं श्री भरतभाई सुतरिया, माननीय सांसद, अमरेली (लोक सभा) द्वारा भी वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर परिवर्तित मार्ग पर सेवा का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर ढसा जंक्शन पर होने वाले समारोह में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने जनप्रतिनिधियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। चीतल स्टेशन पर होने वाले समारोह में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा ने जनप्रतिनिधियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया।

श्रीमती निमुबेन जयंतिभाई बांभणीया एवं श्री शंभुप्रसादजी बलदेवदास टुंडीया के साथ अन्य जनप्रतिनिधियों ने बोटाद रेलवे स्टेशन से ढसा जंक्शन रेलवे स्टेशन तक वंदे भारत एक्सप्रेस में यात्रा की। यात्रा के दौरान उन्होंने रेल अधिकारियों एवं यात्रियों से बातचीत कर उनकी प्रतिक्रिया जानी। यात्रियों ने वंदे भारत एक्सप्रेस के परिवर्तित मार्ग से मिलने वाली सुविधा पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा माननीय मंत्री महोदया का आभार व्यक्त किया। बोटाद रेलवे स्टेशन पर माननीय विधायक श्री उमेशभाई मकवाणा भी उपस्थित रहे। इस दौरान वंदे भारत एक्सप्रेस का स्वागत किया गया।

धोला रेलवे स्टेशन पर वंदे भारत एक्सप्रेस के पहुंचने पर भी उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। स्टेशन पर उपस्थित नागरिकों एवं रेल यात्रियों ने अपने सांसद एवं मंत्री का जोरदार अभिवादन किया तथा नई रेल सेवा के प्रति अपनी खुशी व्यक्त की।

ढसा जंक्शन रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में श्री मयुरभाई पटेल, जिला भाजपा प्रमुख, बोटाद; श्रीमती पायलबेन माथोलिया, जिला पंचायत प्रमुख, बोटाद; श्री सुरेशभाई गोधाणी, पूर्व जिला प्रमुख तथा श्री भोलाभाई रबारी, चेयरमैन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर रेलवे के अधिकारी एवं कर्मचारी, जनप्रतिनिधि, रेल यात्री, आमजन तथा मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

परिवर्तित मार्ग से इन स्टेशनों को मिलेगा लाभ

परिवर्तित मार्ग के पश्चात वेरावल-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस (26902) तथा साबरमती-वेरावल वंदे भारत एक्सप्रेस (26901) अब जूनागढ़, चीतल, ढसा, धोला, बोटाद, धंधुका, धोलका और गांधीग्राम स्टेशनों पर ठहराव प्रदान करेगी। इससे सौराष्ट्र एवं मध्य गुजरात के प्रमुख क्षेत्रों के बीच तेज, सुविधाजनक एवं आधुनिक रेल कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिलेगा।

वेरावल-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस (ट्रेन संख्या 26902)

ट्रेन संख्या 26902 वेरावल-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस गुरुवार को छोड़कर सप्ताह में 6 दिन चलेगी। यह ट्रेन वेरावल से 15:50 बजे प्रस्थान कर 22:25 बजे साबरमती पहुंचेगी।

स्टेशनों पर आगमन का समय इस प्रकार रहेगाः जूनागढ़ः 16:48 बजे, चीतलः 18:04 बजे, ढसाः 18:28 बजे, धोलाः 18:50 बजे, बोटादः 19:30 बजे, धंधुकाः 20:10 बजे, धोलकाः 21:00 बजे एवं गांधीग्रामः 21:50 बजे।

साबरमती-वेरावल वंदे भारत एक्सप्रेस (ट्रेन संख्या 26901)

ट्रेन संख्या 26901 साबरमती-वेरावल वंदे भारत एक्सप्रेस भी गुरुवार को छोड़कर सप्ताह में 6 दिन चलेगी। यह ट्रेन साबरमती से 06:00 बजे प्रस्थान कर 12:50 बजे वेरावल पहुंचेगी।

स्टेशनों पर आगमन का समय इस प्रकार रहेगाः गांधीग्रामः 06:16 बजे, धोलकाः 06:50 बजे, धंधुकाः 07:35 बजे, बोटादः 08:20 बजे, धोलाः 08:48 बजे, ढसाः 09:17 बजे, चीतलः 09:43 बजे, जूनागढ़ः 11:00 बजे।

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है वंदे भारत एक्सप्रेस

वंदे भारत एक्सप्रेस में कुल 08 कोच हैं, जिनमें चेयर कार श्रेणी के 07 कोच तथा एग्जीक्यूटिव चेयर कार श्रेणी का 01 कोच शामिल है। प्रत्येक कोच में पैसेंजर इनफॉर्मेशन सिस्टम (PIS) स्क्रीन लगी हैं, जिनके माध्यम से आगामी स्टेशन, ट्रेन की गति एवं मार्ग संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। यात्रियों की सुविधा के लिए प्रत्येक सीट के नीचे मोबाइल, लैपटॉप एवं टैबलेट चार्ज करने हेतु चार्जिंग सॉकेट एवं USB पोर्ट उपलब्ध हैं।

यात्रियों के लिए भोजन की सुविधा भी उपलब्ध है। टिकट बुकिंग के समय यात्री ब्रेकफास्ट, स्नैक्स एवं डिनर का विकल्प चुन सकते हैं, जिसे सीट पर ही उपलब्ध कराया जाता है।

ट्रेन में टच-फ्री एवं आधुनिक बायो-वैक्यूम शौचालय, प्रत्येक कोच में चाय, कॉफी एवं गर्म पानी के लिए मिनी पेंट्री, यात्रियों की सुरक्षा के लिए नाइट-विजन सक्षम सीसीटीवी कैमरे, सेंसर आधारित दरवाजे तथा दिव्यांग यात्रियों के लिए व्हीलचेयर एवं अनुकूल शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त यात्रियों के लिए ऑन-बोर्ड वाई-फाई (Wi-Fi) की सुविधा भी प्रदान की गई है।

वंदे भारत एक्सप्रेस के परिवर्तित मार्ग से सौराष्ट्र एवं गुजरात के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बीच संपर्क और अधिक मजबूत होगा तथा यात्रियों को आधुनिक, सुरक्षित, आरामदायक एवं समयबद्ध रेल यात्रा का लाभ मिलेगा।

अहमदाबाद मंडल की पहल: लोको पायलटों के लिए मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन पर 4 दिवसीय सामूहिक ध्यान सत्र

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा वर्तमान समय में बढ़ते तनाव, कार्यस्थल के दबाव तथा मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को देखते हुए 17 से 20 अगस्त 2026 तक आर्ट ऑफ लिविंग के अनुभवी प्रशिक्षकों के सहयोग से सामुदायिक भवन साबरमती में सामूहिक ध्यान सत्र का आयोजन किया जा रहा है।

इस ध्यान सत्र के दौरान मंडल रेल प्रबंधक (DRM), अहमदाबाद, श्री वेद प्रकाश ने लोको पायलटों से संवाद करते हुए कहा कि भारतीय रेलवे के लोको पायलट प्रतिदिन ऑस्ट्रेलिया की कुल आबादी के बराबर लगभग 2.2 करोड़ यात्रियों को सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए लोको पायलटों के लिए अपने तन, मन और मस्तिष्क को भी स्वस्थ एवं फिट रखना आवश्यक है।

उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि लगभग तीन महीने पहले उनका वजन 122 किलोग्राम था, जिसे उन्होंने 18 से 20 घंटे की व्यस्त दिनचर्या के बावजूद 'आर्ट ऑफ लिविंग' की तकनीकों को अपनाकर 92 किलोग्राम तक नियंत्रित किया है। श्री वेद प्रकाश ने जोर देकर कहा कि 30 किलोग्राम वजन कम करने का यह सफर केवल व्यायाम या खान-पान पर नियंत्रण से संभव नहीं हुआ, बल्कि यह मन और शरीर के बीच संतुलन का परिणाम है। उन्होंने कहा कि जीवन और कार्य-पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत सबसे पहले स्वयं से होती है। यही बदलाव आगे चलकर पूरे समाज और संगठन को बेहतर बनाने में योगदान देता है।

ध्यान सत्र के दौरान प्रशिक्षक श्री अल्पेश त्रिवेदी एवं नीलमबेन पटेल द्वारा प्रतिभागियों को ध्यान के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक महत्व के बारे में जानकारी दी गई। उन्होने बताया कि नियमित ध्यान से व्यक्ति में भावनात्मक स्थिरता आती है, आध्यात्मिक विकास को बल मिलता है, तनाव में कमी होती है तथा समाज में सामुदायिक जुड़ाव और आपसी सौहार्द बढ़ता है। उपस्थित प्रतिभागियों ने अनुभव किया कि ध्यान के माध्यम से मन को एकाग्र कर नकारात्मक विचारों से ऊपर उठकर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। यह सामूहिक ध्यान सत्र अहमदाबाद मंडल के साबरमती कम्युनिटी सेंटर में रेल अधिकारियों एवं रेल कर्मचारी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया जिसमें 100 से अधिक लोको पायलट भी शामिल थे। प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में सभी प्रतिभागियों ने शांत वातावरण में ध्यान का अभ्यास किया और मानसिक सुकून का अनुभव किया। सइस अवसर पर आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर के प्रेरणादायी विचारों को भी साझा किया गया कि "ध्यान ही वह माध्यम है जिससे नकारात्मक विचारों से ऊपर उठकर सकारात्मकता स्वतः और स्वाभाविक रूप से आती है।"

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य रेल कर्मचारियों को मानसिक शांति, सकारात्मक सोच तथा आत्मिक संतुलन की ओर प्रेरित करना है, ताकि वे दैनिक जीवन के तनाव और चुनौतियों का सामना अधिक सहजता एवं आत्मविश्वास के साथ कर सकें। पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल सभी रेल कर्मचारियों से अपील करता है कि वे अपने दैनिक जीवन में ध्यान को अपनाएं तथा ऐसे सामूहिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता करें, जिससे व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ कार्यक्षमता, आपसी समन्वय एवं सामाजिक सद्भाव को भी मजबूती मिल सके।